वर्ष-22 अंक-341
पृष्ठ-8 मूल्य-2.00

भोपाल
शनिवार 12 जुलाई 2025
श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया
विक्रम संवत्-2082

E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

म.प्र. के सर्वाधिक केंद्रों तक प्रसारित प्रदेश का एकमात्र समाचार पत्र

दैनिक
समय जगत

भोपाल, दिल्ली, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

एक संदेश-पूरा देश

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

सीएम मोहन यादव ने की करोड़ों रुपए की उद्योग स्कीमों की शुरुआत

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉनक्लेव में जुटे देशभर के उद्योगपति

इंदौर। इंदौर में मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉनक्लेव 2025 का आयोजन हुआ। इसमें देशभर के एक हजार से अधिक उद्योगपति इंदौर आए हैं। सीएम मोहन यादव ने करोड़ों रुपए की उद्योग स्कीमों की शुरुआत की। इसके अंतर्गत सुबह शहरी उत्कृष्टता के लिए आधुनिक तकनीक विषय विषय पर सत्र का आयोजन हुआ जिसमें शहरी विकास में आधुनिक तकनीकों जैसे एआई, आईओटी, क्वांटम तकनीकों के प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की गई। सत्र में विनय ठाकुर, स्पेशल डायरेक्टर जनरल BISAG N ने बताया कि भूमिका सत्र में शहरी क्षेत्र में उत्कृष्ट अवसंरचना के विकास के लिए आधुनिक तकनीक के एकीकरण से नागरिकों के पक्ष में उपयोग किया जाए जिसमें परिवहन सुविधा, स्मार्ट पुलिसिंग, जिओ टैगिंग कर रेरा नियामकों की मॉनिटरिंग, एआई टूल का मैनेजमेंट के संबंध में बताया गया। सत्र में आर के मिश्रा, मैनेजिंग डायरेक्टर , NICSI ने बताया कि आधुनिक तकनीक के समायोजन के लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत NICSI के द्वारा शहरी विकास के लिए विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं। कमलाकन्नन थीरुवादी, रीजनल एग्जीक्यूटिव, दक्षिण एशिया बेंटली सिस्टम, ने कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर में ग्रोथ कॉनक्लेव का आयोजन होना सुखद हैं। उन्होंने कहा कि शहरी अवसंरचना में आधुनिक तकनीक के समायोजन में डिजिटल ट्विन जिसमें रियल टाइम में डेटा का उपयोग करके उसके व्यवहार के अनुकरण के आधार पर एनालिसस कर कार्ययोजना बनाया जाना आवश्यक हैं। जिससे कई समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध डाटा का प्रयोग कर रियल टाइम एनालिसिस कर समग्र रूप से समाधान उपलब्ध कराया जाना चाहिए। मध्य प्रदेश में कई संगठन ऐसे है जो रियल टाइम डाटा का उपयोग कर प्रबंधक का कार्य कर रहे है।जो भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होंगे। आशीष प्रधान, सीटीओ क्विक हिल ने बताया कि टेक्नोलॉजी के प्रयोग के साथ साथ आवश्यक है कि भविष्य के संभावनाओं और साइबर सिक्योरिटी को ध्यान रखते हुए ऐसा मजबूत गवर्नेंस मॉडल विकसित किया जाए जिससे नागरिकों के डाटा एवं जानकारियों को सुरक्षित किया जा सके और साइबर युद्ध जैसी परिस्थितियों में भी सुरक्षित रूप से कार्य कर सकें। शामिक जोशी , हेड़ स्न्हश्च्ङ्क, द्वारा बताया गया कि शहरी विकास में कनेक्टिविटी सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स के प्रयोग से यातायात की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, नागरिकों के दैनिक जीवन को आसान बनाया जा सकता है साथ ही प्रशासन के स्तर पर भी सुविधा उपलब्ध हो सकती हैं। उनके द्वारा मुंबई शहर में सीमलेस टिकटिंग और बेंगलुरु में द्रुत मॉडल के संबंध में विस्तृत रूप से बताया गया।

क्वांटम टेक्नोलॉजी के बढ़ावे पर दिया जोर

डॉ. अभय किम्मटकर, मैनेजिंग डायरेक्टर cstechAI कहा कि शहरी क्षेत्र में सामान्य सुविधाओं के लिए अवसंरचनात्मक विकास में तकनीकों का समायोजन आवश्यक हैं। जिसके लिए आवश्यक है कि आज से 50 वर्ष बाद के समय को ध्यान रखते हुए कार्ययोजना बनाई जाए। जिसके शहरी क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य किया जाए । जैसे जल वितरण के क्षेत्र में सेंसर का प्रयोग कर पानी के वितरण , वितरित पानी का शुद्धता के पैरामीटर, आदि की मॉनिटरिंग की जा सके। प्रवीण दवे, सोल्यूशन आर्किटेक्ट, गूगल क्लाउड इंडिया, ने कहा कि शहरी विकास , नियोजन, सम्पत्ति मूल्यांकन आदि के लिए एक एकीकृत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया जाए जिससे डिजिटलीकरण में आसानी हो , त्वरित परिणाम प्राप्त हो , प्रशासन की क्षमतावर्धन हो और नागरिकों को सुविधा उपलब्ध हो सके। एकीकृत डिजिटल फ्रेमवर्क के विकास से त्वरित परिणाम प्राप्त होने से उद्देश्य की प्राप्ति हो सकेगी। श्रीजीत नायर, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट PRO-TEAN ने नागरिकों के डाटा शेयरिंग के लिए अनुमति आधारित डिजिटल स्ट्रक्चर बनाया जाए। जिससे नागरिकों को भी जानकारी हो की वे अपना डाटा किसे शेयर कर रहे है ।साथ ही विभिन्न एप्लिकेशन पर फीडबैक लिया जाए जिससे। शहरी प्रशासन में पारदर्शिता एवं किसी समस्या पर एक्शन टेकिंग को आसान कर सके। इसके अतिरिक्त सत्र में साइबर सिक्योरिटी को अधिक मजबूत बनाने के लिए क्वांटम टेक्नोलॉजी के उपयोग को बढ़ाए जाने पर जोर दिया गया। सत्र में बताया गया कि क्वांटम टेक्नोलॉजी नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है जिसके लिए भारत सरकार द्वारा क्वांटम मिशन संचालित है।

अब तक 1.45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए बाबा बर्फानी के दर्शन

अमरनाथ यात्रा से श्रद्धालुओं में दिख रहा काफी उत्साह

जम्मू। बाबा बर्फानी के दर्शनों के लिए बीते 8 दिन से अमरनाथ यात्रा जारी है। यहां अब तक 1.45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए बाबा बर्फानी के दर्शन किए हैं। जबकि शुक्रवार को 6,482 यात्रियों का एक और जत्था कश्मीर के लिए रवाना हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि 3 जुलाई को यात्रा शुरू होने के बाद से अब तक 1.45 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री पवित्र गुफा के दर्शन कर चुके हैं। उन्होंने कहा, शुक्रवार को 6,482 यात्रियों का एक और जत्था भगवती नगर यात्री निवास से दो सुरक्षा काफिलों में घाटी के लिए रवाना हुआ है। पहले काफिले में 107 वाहन शामिल हैं, जिनमें 2,353 यात्री मौजूद हैं। ये जत्था सुबह 3.20 बजे बालटाल बेस कैंप के लिए रवाना हुआ, जबकि दूसरे काफिले में 161 वाहन मौजूद हैं और उनमें 4,129 यात्री थे। ये काफिला सुबह 4:04 बजे नुनवान (पहलगाम) बेस कैंप के लिए रवाना हुआ है। बता दें कि गुफा मंदिर में एक बर्फ का शिवलिंग है, जो चंद्रमा के चरणों के साथ बढ़ता और घटता है। भक्त मानते हैं कि यह बर्फ का शिवलिंग भगवान शिव की पौराणिक शक्तियों का प्रतीक है। श्री अमरनाथ जी यात्रा हिंदू भक्तों के लिए सबसे पवित्र तीर्थयात्राओं में से एक है। मान्यता है कि भगवान शिव ने इस गुफा में माता पार्वती को शाश्वत जीवन और अमरता के रहस्य बताए थे। गुरुवार को पहलगाम में छड़ी मुबारक (भगवान शिव की पवित्र गदा) का भूमि पूजन किया गया। छड़ी मुबारक के एकमात्र संरक्षक महंत स्वामी दीपेंद्र गिरि के नेतृत्व में श्रीनगर के दशनामी आखाड़ा भवन से पहलगाम ले जाया गया।पहलगाम में छड़ी मुबारक को गौरी शंकर मंदिर ले जाया गया, जहां भूमि पूजन हुआ। बाद में इसे मार्तंड सूर्य मंदिर ले जाया गया, जहां पूजा की गई और छड़ी मुबारक को मार्तंड सूर्य मंदिर के पवित्र झरने में स्नान कराया गया। छड़ी मुबारक 9 अगस्त को पवित्र गुफा मंदिर पहुंचेगी, जब यात्रा आधिकारिक रूप से समाप्त होगी। जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास आने वाले यात्रियों के अलावा, कई यात्री सीधे बालटाल और नुनवान (पहलगाम) में ऑन-स्पॉट पंजीकरण के लिए पहुंच रहे हैं। इस साल की अमरनाथ यात्रा के लिए व्यापक बहु-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। यह यात्रा 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद हो रही है। इस हमले में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने पहलगाम के बैसरन में धर्म के आधार पर 26 नागरिकों की हत्या कर दी थी। सेना, बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसएसबी और स्थानीय पुलिस की मौजूदा संख्या बढ़ाने के लिए 180 अतिरिक्त सीएपीएफ कंपनियों की तैनाती की गई है।

जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास से गुफा मंदिर तक के पूरे मार्ग और दोनों बेस कैंपों के बीच के सभी ट्रांजिट कैंपों को सुरक्षा बलों द्वारा सुरक्षित किया गया है। इस साल अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से शुरू हुई और 38 दिनों के बाद, 9 अगस्त को श्रावण पूर्णिमा और रक्षा बंधन के दिन समाप्त होगी। यात्री कश्मीर हिमालय में समुद्र तल से 3,888 मीटर ऊपर स्थित पवित्र गुफा मंदिर तक पारंपरिक पहलगाम मार्ग या छोटे बालटाल मार्ग से पहुंचते हैं। पहलगाम मार्ग से जाने वाले यात्री चंदनवारी, शेषनाग और पंचतरणी से होकर 46 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुफा मंदिर पहुंचते हैं। इस मार्ग पर यात्रा पूरी करने में चार दिन लगते हैं। वहीं, बालटाल मार्ग से जाने वाले यात्री 14 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुफा मंदिर पहुंचते हैं और उसी दिन दर्शन कर बेस कैंप लौट आते हैं। इस साल सुरक्षा कारणों से यात्रियों के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज करेंगे एक्वा पार्क का भूमिपूजन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार 12 जुलाई को भोपाल में बनने जा रहे अत्याधुनिक मछलीघर एक्वा पार्क का भूमि-पूजन करेंगे। भोपाल सहित पूरे प्रदेश से भोपाल आने वाले पर्यटकों के ज़हन में मछलीघर की एक खास जगह है। वो पुराना मछलीघर जहां स्कूल की पिकनिक होती थी, माँ-पापा के साथ सैर होती थी, और रंग-बिरंगी मछलियों को देखकर चौंकते, मुस्कराते और कभी-कभी डर भी जाते थे। नीली रोशनी में तैरती सुनहरी मछलियाँ मानो कैनवास पर बनी कोई पेंटिंग थीं। वक्त बीत गया और अब मछलीघर अतीत को साथ में समेटे हुए फिर से भोपाल में एक नई पहचान के साथ लौटने जा रहा है। देश के सबसे सुंदर और आधुनिक एक्वा पार्क में से एक भोपाल में आकार लेने जा रहा है। केंद्र सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए 25 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी है, राज्य सरकार का इसमें 15 करोड़ रुपये का सहयोग से 40 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना होगी। एक्वा पार्क न केवल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होगा, बल्कि बच्चों के लिए रोमांच, शिक्षा, शोध और कौतूहल का नया केंद्र भी बनेगा।

इतिहास से भविष्य को जोड़ेगा अत्याधुनिक एक्वा पार्क, मछली घर नहीं, अब मछलियों की दुनिया बसेगी

देश की 'हाउस टू हाउस स्ट्राइक' रणनीति होगी मजबूत, अधिक क्षमता की मिसाइलें होंगी तैनात

नई दिल्ली। भारत की सैन्य शक्ति में एक और रणनीतिक बदलाव होने वाला है। भारतीय वायुसेना के अत्याधुनिक सुखोई-30एमकेआई फाइटर जेट्स पर अब ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के साथ इजरायल की घातक लंबी दूरी तक मार करने वाली लोरा (लांग रेजआर्टिलरी) बैलिस्टिक मिसाइलों को भी तैनात करने की योजना बन रही है। यह फैसला भारत की 'हाउस टू हाउस स्ट्राइक' नीति को नई धार देने वाला है, जिससे पाकिस्तान और चीन तक भारत की पहुंच और प्रभाव क्षमता और अधिक सशक्त होगी। लोरा मिसाइल इजरायल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई) की एक अत्याधुनिक टैक्टिकल बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता 400-430 किलोमीटर तक है। इसकी सबसे बड़ी खासियत इसकी बेहद सटीक निशाना साधने की क्षमता है। इसकी सर्कुलर एरर प्रोबेबिलिटी (सीईपी) 10 मीटर से भी कम है, जिसका अर्थ है कि मिसाइल अपने लक्ष्य के बेहद करीब गिरती है। वहीं ब्रह्मोस मिसाइल पहले से ही भारतीय सैन्य प्रणाली का हिस्सा है, जिसकी रेंज 290 से 450 किमी तक है और यह सुपरसोनिक स्पीड से दुश्मन के कमांड सेंटर को तबाह कर देती है। जब ब्रह्मोस और लोरा जैसी घातक मिसाइलों को सुखोई-30एमकेआई जैसे फाइटर जेट्स पर तैनात किया जाएगा, तब यह कॉम्बिनेशन भारत के लिए एक 'डेडली ट्रायो' बन जाएगा। लोरा को बिना सीमा पार किए लांच किया जा सकता है, जिससे यह भारतीय वायुसेना को डीप-स्ट्राइक ऑपरेशंस में रणनीतिक बढ़त देगा। इस मिसाइल से पाकिस्तान के इस्लामाबाद और कराची से लेकर चीन के ल्हासा और शिनजियांग जैसे क्षेत्रों तक लक्ष्य साधे जा सकते है। हाल ही में इजरायल-ईरान टकराव के दौरान लोरा मिसाइल की क्षमता देखने को मिली थी, जब इजरायल ने ईरान के भीतर रणनीतिक ठिकानों पर सटीकता से इस्तेमाल किया। भारत भी अब ऐसी क्षमता की ओर बढ़ रहा है, जहां जरूरत पड़ने पर सीमा पार जवाबी नहीं बल्कि पहले स्ट्राइक की भी ताकत उसके पास होगी।

पश्चिम बंगाल में टीएमसी नेता की हुई हत्या

कोलकाता। पश्चिम बंगाल से आए दिन हिंसा और आगजनी की खबरें आ रहीं हैं। गुरुवार देर रात यहां एक टीएमसी नेता की बेहरमी से हत्या कर दी गई। दक्षिण 24 परगना जिले के भांगर में तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता रज्जाक खान की बेरहमी से हत्या कर दी गई। अज्ञात हमलावरों ने रज्जाक खान पर पहले गोली चलाई और फिर धारदार हथियार से हमला कर उनकी जान ले ली। इस घटना ने इलाके में तनाव और दहशत का माहौल है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही है। पुलिस ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि खान पर हमला उस समय हुआ जब वह सिरिस्ताला के पास अपने घर लौट रहे थे। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मृत्यु हो गई।

कांवड़ यात्रियों की सुरक्षा के साथ होंगी सुदृढ़ व्यवस्थाएं: डॉ. मोहन यादव

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रदेश में सभी कावड़ यात्रियों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम के साथ अनुकूल व्यवस्थाएँ भी सुनिश्चित की जा रही है। इस संबंध में निर्देश जारी किये जा चुके हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को उज्जैन त्रिवेणी शनिमंदिर से कावड़ यात्रा में शामिल हुए। उन्होंने कावड़ यात्रियों का पुष्प-वर्षा कर स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कावड़ का पूजन कर कावड़ उठाई और अग्नि अखाड़ा के महामंडलेश्वर संत उत्तम स्वामी के साथ पैदल चलकर कावड़ यात्रा का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में सभी त्यौहार उत्साह के साथ मनाने की परम्परा राज्य सरकार ने शुरू की है। ईश्वर और संतजन के आशीर्वाद से उज्जैन में सिंहस्थ-2028 की तैयारियाँ तेजी से की जा रही है। हम इस सोच के साथ सभी

तैयारियां कर रहे है कि वर्ष-2028 के बाद यदि प्रतिवर्ष सिंहस्थ जैसे आयोजन हों तो किसी प्रकार की समस्या न आये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 के दृष्टिगत उज्जैन में संतों के लिये आश्रम और अन्य व्यवस्थाओं को जुटाने के लिये सिंहस्थ धार्मिक सिटी का निर्माण भी किया जा रहा है, जिससे बड़ी संख्या में उज्जैन आने वाले श्रृद्धालुओं के लिये सुविधाजनक व्यवस्था सुनिश्चित होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कावड़ यात्रियों को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया में कई संस्कृतियाँ हैं, दुनिया में तो 194 देश है लेकिन कोई देश अपने कोई भी शुभ काम प्रारंभ करने के लिए जल के माध्यम से कोई संकल्प नहीं लेता है।

कवायद | **'विश्व जनसंख्या दिवस' पर देशवासियों को किया जागरुक**

भाजपा सरकार में स्वस्थ भारत का मार्ग हो रहा है प्रशस्तः जेपी नड्डा

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और सीएम रेखा गुप्ता समेत कई नेताओं ने 'विश्व जनसंख्या दिवस' पर देशवासियों को जागरुक किया। उन्होंने जनसंख्या से जुड़ी चुनौतियों का भी जिक्र किया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, विश्व जनसंख्या दिवस' परिवार नियोजन के बारे में जागरूकता बढ़ाने और जनसंख्या से जुड़ी चुनौतियों से निपटने की हमारी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का मंच है। उन्होंने आगे कहा, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से केंद्र सरकार पूरे देश में आवश्यक परिवार नियोजन सेवाएं प्रदान कर रही है, जिससे परिवार सशक्त हो रहे हैं और एक स्वस्थ भारत का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। इस साल की थीम, 'मां और बच्चे के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए गर्भावस्था का सही समय और अंतर,' माता और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए नियोजित माता-पिता बनने के महत्व पर जोर देती है। विश्व जनसंख्या दिवस 2025 का नारा- 'मां बनने की उम्र वही, जब तन और मन की तैयारी सही'- माता-पिता बनने के लिए शारीरिक और भावनात्मक रूप से तैयार रहकर सूचित और सशक्त निर्णय लेने के महत्व को रेखांकित करता है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा, विश्व जनसंख्या दिवस पर, हम एक न्यायपूर्ण, सशक्त और समतामूलक समाज के अपने दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं, जहां प्रत्येक व्यक्ति को अवसर, अधिकार और सम्मान प्राप्त हो। हमारे युवाओं को एक ऐसे भविष्य का हक है, जहां वे सूचित विकल्प चुन सकें, समानता के साथ जी सकें और बिना किसी सीमा के सपने देख सकें। आइए, हम समावेशी

नीतियों, सतत विकास और हर जीवन को बेहतर बनाने की साझा प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें, जिसके लिए हम जिम्मेदार हैं। वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने एक्स पर लिखा, विश्व जनसंख्या दिवस जागरूक करता है कि सुरक्षित भविष्य और भावी पीढ़ियों को बेहतर दुनिया प्रदान करने के लिए हम जनसंख्या विस्फोट जैसी स्थिति से बचें। जनसंख्या की असंतुलित बढ़ोतरी समाज और राष्ट्र के साथ आवश्यक संसाधनों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अलावा, कांग्रेस नेता गोविंद सिंह डोटासरा ने विश्व जनसंख्या दिवस पर कहा, देश में जनसंख्या वृद्धि की निरंतर बढ़ती गति न केवल चिंता का विषय है, बल्कि यह हमारे सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन के लिए भी एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर आइए हम सभी मिलकर जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों के प्रति समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प लें। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर लिखा, संतुलित जनसंख्या ही समृद्ध समाज और सतत विकास की सुदृढ़ आधारशिला है। जनसंख्या नियंत्रण आज केवल आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की अनिवार्य नीति है। यह लक्ष्य जन-जागरूकता, जन-भागीदारी और जननीति के समन्वित प्रयासों से ही प्राप्त हो सकता है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, तेजी से बढ़ती जनसंख्या हमारे संसाधनों, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है। आइए, हम सभी जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन के महत्व को समझें और समाज को जागरूक कर एक संतुलित एवं सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

सार-समाचार

नवीन रोड स्वीपिंग मशीन व लोडिंग मैजिक का महापौर प्रहलाद पटेल ने किया लोकार्पण

रतलाम। शहर की सड़कों की सफाई हेतु दूसरी नवीन स्वीपिंग मशीन व लोडिंग मैजिक का लोकार्पण महापौर प्रहलाद पटेल ने निगम अध्यक्ष श्रीमती मनीषा शर्मा, विद्युत एवं यांत्रिकी समिति प्रभारी अक्षय संघवी, स्वच्छता एवं ठोस अपशिष्ट समिति प्रभारी विशाल शर्मा, महापौर परिषद सदस्य, पार्षद व निगम अधिकारी एवं कर्मचारियों के साथ विधिवत् पूजा-अर्चना कर किया। महापौर प्रहलाद पटेल ने बताया कि शहर की सड़कों की सफाई हेतु 2 स्वीपिंग मशीन लगाई जाना है जिसके तहत दूसरी स्वदेशी स्वीपिंग मशीन व लोडिंग मैजिक निगम में आ चुकी है तथा पहली स्वीपिंग मशीन व लोडिंग मैजिक का लोकार्पण 16 जून को किया था। निगम के पास दो रोड स्वीपिंग मशीन होने से शहर की सड़कों की सफाई का कार्य तीव्र गति से होगा तथा नगर स्वच्छ व सुन्दर दिखाई देगा। रोड स्वीपिंग मशीनों के साथ लोडिंग मैजिक साथ-साथ चलेगी, निविदाकार द्वारा इस मशीनो हेतु ड्रायवर, 6-6 सफाई संरक्षक, डीजल आदि का व्यय स्वंय वहन करेगा। इस अवसर पर महापौर परिषद सदस्य पप्पू पुरोहित, रामूभाई डाबी, पार्षद रणजीत टांक, धर्मेन्द्र रांका, योगेश पापटवाल, पार्षद प्रतिनिधि शेरू पठान, जलज सांकला, रमेशचन्द्र पांचाल, विजयसिंह चौहान, उपयंत्री मनीष तिवारी आदि उपस्थित थे।

प्राची पुरोहित को पीएचडी उपाधि मिलने पर बधाई

रतलाम। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा अधिसूचना जारी की जाकर प्राची पुरोहित, रतलाम को संगीत गायन के क्षेत्र में पीएच.डी. उपाधि प्रदान की गई। प्राची पुरोहित ने अपना शोधकार्य- डॉ. वर्षा अग्रवाल के निर्देशन में 'गायनाचार्य पं.सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट की संगीत विरासत एवं संगीत शिक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर किया गया। प्राची की संगीत (गायन) में रूचि बचपन से ही रही है तथा वर्ष 2018 में संगीत कला में विश्वविद्यालय में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने पर 'स्वर्ण पदक' से राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया गया था। प्राची ने पीएच.डी. की उपाधि मिलने पर इसका श्रेय अपने गुरूजन पं.सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट, डॉ. स्नेहा पंडित एवं अपने माता-पिता को दिया है। प्राची के पिता राजेन्द्र पुरोहित नगर निगम कर्मचारी है। प्राची की इस उपलब्धि पर परिवारजन एवं मित्रगणों द्वारा हर्ष व्यक्त किया।

पीएम जनमन अंतर्गत लाभ से नहीं छूटे कोई हितग्राही

समय जगत बीनागंज। प्रधानमंत्री जनजातीय न्याय महा अभियान (पीएम जनमन) अंतर्गत शासन के विभिन्न विभागों की संचालित योजनाओं और सेवाओं जैसे आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, खाधान्न पर्ची, आवास, शौचालय एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाएं आदि का लाभ अनुसूचित जनजाति के तहत विशेष सहरिया जाति के लोगों को प्रदान किये जाने हेतु कोई भी व्यक्ति लाभ से वंचित ना रहे। इस हेतु कलेक्टर किशोर कुमार कान्याल के निर्देशानुसार और मुख्यकार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक दुबे के मार्गदर्शन में जनपद पंचायत चांचौड़ा क्षेत्र में पीएम जनमन अंतर्गत ग्राम पंचायतों के सचिव और ग्राम रोजगार सहायक की बैठक अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं सीईओ जनपद पंचायत चांचौड़ा गिरिराज दुबे द्वारा ली गई बैठक में सीईओ द्वारा संबंधितों को निर्देश दिए कि उक्त कार्य शासन और कलेक्टर महोदय की प्राथमिकता का है जिसमें चयनित हितग्राही परिवारो का एक भी व्यक्ति शासन की योजनाओ से वंचित नहीं रहे। बैठक में सीईओ के साथ कदम सिंह मीना बीपीओ, बीसी एसबीएम एवं आवास तथा सचिव और ग्राम रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा पर नगर में रहा विशेष उत्साह

बिस्टान। श्री कृष्ण मंदिर चौक में स्थित कृष्ण मंदिर में विशेष आयोजन के तहत संकीर्तन एवं गुरु पूजन का आयोजन हुआ। जिसमें अनेक श्रद्धालु शामिल हुए। संत सिंगाजी भजन मंडली द्वारा भजन कीर्तन कर हलवे की प्रसादी बांटी गई। इस अवसर पर नारायण पाटिल, हीरालाल बागुल, मोतिया सिंधिया, तुलसीराम भील, राजाराम सोलंकी, रेवाराम राठौर, गबु पटेल, सहित उपस्थित रहे। जामली धाम के खाटू श्याम मंदिर पर भक्तों का ताता लगा। दर्शन पूजन और प्रसादी का वितरण हुआ। स्कूल मार्ग स्थित पूर्णानंद बाबा मंदिर पर कीर्तन हुए। महाप्रसादी बांटी गई।

स्वच्छता मित्र का अथक परिश्रम हमारे लिए है सर्वोपरिः उमाकांत शर्मा

समय जगत, सिरोंज। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी अंतर्गत गृहप्रवेश एवं नवीन आवासों के भूमि पूजन कार्यक्रम के इंदौर से मुख्यमंत्री के लाइव प्रसारण कार्यक्रम्भक आयोजन स्थानीय नगर पालिका में किया गया। आम नागरिकों के हित से जुड़े सरकार के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में सहभागिता करने के लिए विधायक उमाकांत शर्मा ने भी सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान विधायक उमाकांत शर्मा ने नगरपालिका में कार्यरत स्वच्छता मित्रो को बारिश के मौसम में स्वच्छता करने के लिए सहायक बरसाती कपड़ो का भी वितरण किया। इस अवसर पर पूर्व से आवंटित अपने प्रधानमंत्री आवास को पूर्ण कर चुके लाभान्वित हितग्राहियों का गृहप्रवेश भी कराया गया। नपा परिसर में स्वच्छता मित्रो के साथ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक शर्मा ने धन्यवाद देते कहा कि आपकी अथक मेहनत के कारण ही अपना शहर साफ सुथरा दिखाता है यह हमारी शारीरिक एवं आर्थिक उन्नति का घोतक है। ग्रीन ओर क्लीन सिरोंज बनाने के लिए जितनी भी सीसी सड़के ओर अन्य विकास कार्य हे वह नगरपालिका की देन है। मध्यप्रदेश में डबल इंजन की सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री मोहन यादव की देन है। उन्होंने कहा कि यह सही बात हे कि राजनैतिक मतभेद होते है लेकिन जब जनहित का कोई मुद्दा समान आता है तो यह हम सबका कर्तव्य हे कि तब हम सबको एक रहना चाहिए। हमारे यह सफाई मित्र सर्दी,गर्मी बरसात के मौसम में सुबह चार बजे से कचरे में,गीले में, कीचड़ पानी में काम कर जनसेवा करते हैं और इनका कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। संविधान के अनुसार मूलभूत सुविधाओं का पाने का आपका भी अधिकार है आप सभी की अनेक मांगों में से वाजिब मांगो को पूरा करने के लिए में भी निर्देश दे चुका हूं लेकिन प्रशासनिक अधिकारियों की लापरवाही की वजह से कुछ अधूरी बनी हुई है। पूर्व के समय में बाल्मीकि समाज ने बडी परिस्थितियों में संघर्ष किया है। लेकिन डॉ अंबेडकर जी, बाबू जगजीवन राम जी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक डॉ हेडगेवार जी,गुरुजी,देवरस जी, श्यामप्रसाद मुखर्जी,दीनदयाल जी, सहित भाजपा सरकारों के प्रयासों से सामाजिक अस्पृश्यता और छुआछूत को समाप्त करने के लिए जो जनजागरण अभियान चलाए गए उसकी बदौलत आज समाज में बहुत परिवर्तन आया हैं। आज जो भी स्वच्छता मित्र शहरों को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं हम उन सभी के पार्टी हृदय से श्रद्धा रखते हैं। इंदौर से लाइव प्रसारण के माध्यम से नवीन प्रधानमंत्री आवास योजना का आज मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भूमिपूजन किया है। जल्दी ही हमारे शहर के भी पात्र हितग्राहियों को आवास योजना का लाभ मिलेगा। नपा परिसर के हाल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उन्होंने प्रत्येक महिला एवं पुरुष स्वच्छता मित्र के पास पहुंचकर उनका सम्मान करते हुए रैन कोट का वितरण किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से नपाध्यक्ष मनमोहन साहू,उपाध्यक्ष,मनोज शर्मा, वार्डो के पार्षद गण नपा सीएमओ रामप्रकाश साहू,स्वच्छता अधिकारी धीरज मैना सहित अधिकारी कर्मचारी एवं स्वच्छता मित्र मौजूद रहे।

विद्यालय बंद, भवन खाली, जिम्मेदार कौन आरटीआई में शिक्षा विभाग का गोलमोल जवाब

समय जगत, मण्डला। शहर के कुछ शासकीय शिक्षा गारंटी विद्यालय वर्षो से बंद पड़े हैं और उनके भवनों की स्थिति जर्जर होती जा रही है। वहीं इन भवनों पर अवैध कब्जे की आशंका भी तेज़ हो गई है। इसके संबंध में एक जागरूक नागरिक द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत जिला शिक्षा केन्द्र, मण्डला से मांगी गई जानकारी न केवल टाली गई, बल्कि दो बार विरोधाभासी जवाब देकर मामले को गोलमोल करने का प्रयास किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मण्डला के बढ़ईटोला (आमानाला), चिखलैया टोला (बड़ीखैरी), और वार्ड क्रमांक 14 (कटरा) में स्थित शिक्षा गारंटी विद्यालयों को चुपचाप बंद कर दिया गया। इन विद्यालयों के मर्ज या स्थानांतरण संबंधी कोई स्पष्ट आदेश सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। जब आवेदक ने आरटीआई के तहत इसकी जानकारी चाही, तो पहले आवेदन को एकाधिक विषय का हवाला देकर अमान्य कर दिया गया। पुनः प्रथम अपील अधिकारी के निर्देश पर जब विभाग को सूचना देने का निर्देश मिला, तब विभाग ने जवाब दिया कि यह जानकारी कार्यालय में संधारित नहीं है।

क्या विभाग को नहीं पता कि स्कूल कब और किसके आदेश से बंद हुए : सवाल उठता है कि यदि ये विद्यालय शिक्षा विभाग के अधीनस्थ थे, तो इन्हें बंद करने, मर्ज करने अथवा अन्य स्कूल में समायोजित करने के आदेश आखिर किसने दिए? यदि जिला शिक्षा केन्द्र के पास ही यह जानकारी नहीं है, तो फिर कौन जिम्मेदार है?

खाली भवन बन रहे खतरा, अवैध कब्जे की आशंका: इन बंद विद्यालयों के भवन वर्तमान में बिना देखरेख के खाली पड़े हैं। क्षेत्रीय नागरिकों का कहना है कि इनमें कई जगह ताले तक नहीं लगे हैं और कोई निगरानी नहीं की जा रही है। इससे असामाजिक तत्वों द्वारा अवैध कब्जे की स्थिति निर्मित हो रही है।

जनहित में जवाबदेही जरूरी: आवेदक ने अपने पत्र में मांग की है कि संबंधित विभाग आदेशों की प्रमाणित प्रतियां उपलब्ध कराए, और भवनों की स्थिति को लेकर स्पष्ट कार्ययोजना सार्वजनिक करे।

साथ ही उन अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की जाए जिन्होंने अधिनियम का पालन न करते हुए सूचना से बचने की कोशिश की। यह पूरा मामला यह दिखाता है कि सूचना का अधिकार अधिनियम लागू होने के बावजूद शासकीय कार्यालयों में पारदर्शिता और जवाबदेही की स्थिति अभी भी सवालों के घेरे में है।

इनका कहना

ग्राम पंचायत खैरी अंतर्गत चिखलैया टोला स्कूल बंद होने से जर्जर होते जा रहा है और कब्जा होने की स्थिति बन रही, अगर यह भवन का उपयोग विभाग नहीं कर रहा तो पंचायत को सौंपे जाने पर इसको सुरक्षित करते हुए, जनहित में उपयोग में लाया जा सकता है।

सरपंच
सीमा गोटिया
ग्राम पंचायत खैरी,
उपसरपंच
रूपेश बैरागी
जनपद पंचायत मण्डला

बंद स्कूल भवनों को सुरक्षित किए जाने की जरूरत, कब्जा होने की आ रहीं शिकायतें

मण्डला। जिले के कई शासकीय स्कूल जो विगत लगभग 8-10 वर्षों से तकनीकी कारणों या विद्यार्थियों की संख्या में कमी के चलते बंद कर दिए गए थे, अब उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। ग्राम पंचायत आमानाला के बढ़ईटोला, पंचायत बड़ी खैरी के चिखलैया टोला और कटरा पंचायत के वार्ड क्रमांक 14 स्थित प्राथमिक विद्यालय के भवन आज भी मजबूत स्थिति में हैं, लेकिन विभागीय देखरेख के अभाव में जर्जर होने की कगार पर पहुंच गए हैं। स्थानीय ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार इन भवनों में अवैध कब्जा होने की स्थिति बन गई है। लालीपुर स्कूल इसका उदाहरण है, जहां पहले ही कब्जा हो चुका है। यदि शिक्षा विभाग समय रहते ध्यान नहीं देता, तो ये भवन या तो पूरी तरह जर्जर हो जाएंगे या फिर पूरी तरह कब्जे में चले जाएंगे, जिससे शासन की लाखों रुपये की राशि व्यर्थ हो जाएगी। इस संबंध में पंचायत प्रतिनिधियों ने भी चिंता जाहिर की है। उनका कहना है कि यदि शिक्षा विभाग ये भवन पंचायत को सौंप देता है, तो उनका उपयोग सामुदायिक भवनों के रूप में किया जा सकता है। इससे न केवल भवनों का संरक्षण होगा, बल्कि ग्रामवासियों को भी लाभ मिलेगा। अब देखना होगा कि शिक्षा विभाग इस गंभीर मुद्दे पर क्या निर्णय लेता है। आवश्यक है कि विभाग जनहित को ध्यान में रखते हुए त्वरित कार्रवाई करे, ताकि शासकीय संपत्ति का संरक्षण हो सके और उसका उपयोग समुदायिक में किया जा सके।

गुरु की महिमा अनंत है, सफलता प्राप्ति के लिये गुरु का आशीर्वाद है जरूरी : प्राचार्य श्री डोंगरे

समय जगत, आमला। नगर के हसलपुर ग्राम स्थित डाक्टर भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय आमला में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व राज्य स्तरीय गुरुपूर्णिमा का सीधा प्रसारण देखकर मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर के कांफ्रेंस हाल में गुरुओं के सम्मान समारोह का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य गुलाबराव डोंगरे की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे । महाविद्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री के मुख्य आतिथ्य में संदीपनी स्कूल भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय गुरु पूर्णिमा उत्सव का सीधा प्रसारण डॉ भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय आमला के कांफ्रेंस हाल में विद्यार्थियों एवं आमंत्रित अतिथियों तथा महाविद्यालय स्टॉफ को दिखाया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. गुलाब राव डोंगरे की अध्यक्षता एवं महाविद्यालय जन भागीदारी समिति की अध्यक्ष सुश्री मुक्त ढोलेकर महाविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ. देवराव वागद्रे, सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री लक्ष्मण राव माथनकर , सेवानिवृत शिक्षक श्री अशोक झा, सेवानिवृत्त मुख्य लिपिक श्री गुलाबराव झोड़ के मुख्य आथित्य में गुरु पूर्णिमा उत्सव का आयोजन किया गया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य एवं समस्त प्राध्यापकों ने सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ.देवराव वागद्रे,सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री लक्ष्मण राव माथनकर ,श्री अशोक झा ,श्री गुलाबराव झोड को शाल-श्रीफल से सम्मानित किया । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. पी. के. मिश्रा ने कहा कि गुरु पूर्णिमा गुरुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है।

काशी विश्वनाथ वैदिक गुरुकुल में गुरु पूर्णिमा पर सर्वकल्याण महायज्ञ का किया आयोजन

मंडला। काशी विश्वनाथ वैदिक गुरुकुल में गुरु पूर्णिमा पर्व के शुभ अवसर पर भव्य सर्वकल्याण महायज्ञ का आयोजन विधिवत रूप से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं हवन के साथ हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल के आचार्यों ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन दिए और सनातन धर्म में गुरु की महत्त्वपूर्ण भूमिका को समझाया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा भक्तिमय भजन एवं प्रेरणादायक प्रवचन प्रस्तुत किए गए, जिससे उपस्थित श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। कार्यक्रम में क्षेत्र के कई गणमान्य अतिथि एवं समाजसेवी उपस्थित रहे, जिन्होंने गुरु पूर्णिमा पर्व की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए। हवन, भजन और प्रवचन के उपरांत सभी उपस्थित जनों को प्रसाद वितरित किया गया। यह कार्यक्रम सनातन वैदिक गुरुकुल एवं गोशाला समिति के सदस्यों तथा जिला मंडला के अनेक समाजसेवी संगठनों की सहभागिता से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में काशी विश्वनाथ वैदिक गुरुकुल परिवार ने सभी अतिथियों, सहयोगियों एवं समाजसेवियों का हृदय से आभार प्रकट किया, साथ ही उन दानी सज्जनों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित किया जो गुरुकुल एवं गोशाला को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

लोक कल्याण शिविर में पचास फीसदी समस्याओं का मौके पर हो निपटारा : राज्यमंत्री पंवार

ग्राम नापानेरा में खंड स्तरीय लोक कल्याण शिविर में मंत्री पंवार ने की ग्रामीणों से चर्चा

ब्यावरा / सुठालिया। लोक कल्याण शिविर का अर्थ है कि पचास फीसदी समस्याओं का समाधान तुरंत शिविर में होना चाहिए,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ,जनता की सरकार है जो लोगों की समस्याओं का समाधान उनके दरवाजे पर जाकर करती है । उक्त बात मप्र सरकार के मत्स्य पालन एवम मछुआ कल्याण राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार नारायण सिंह पंवार ने शुक्रवार को विकास खंड के ग्राम नापानेरा में आयोजित लोक कल्याण शिविर में कही। उन्होंने कहा की में अधिकारियों से कहना चाहता हूं कि आप लोग समस्याओं का निवारण करे, इस क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को सरकारी योजनाओं से संबंधित किसी प्रकार की समस्या नहीं रहनी चाहिए। उल्लेखनीय हे की जनता तक सरकारी सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं को सीधे पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित इस शिविर में नापानेरा और आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। विद्यार्थियों को वितरण की साइकिल इस कार्यक्रम के दौरान मंत्री पंवार ने 37 विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण की व विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी और साथ ही विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। इस दौरान पूर्व राज्य मंत्री बद्रीलाल यादव, मंडल अध्यक्ष श्याम सिंह चौहान, नारायण सिंह सलरीयाखेड़ी, मानसिंह राजपूत, सरपंच धापू बाई तोमर एसडीएम गीतांजलि शर्मा, जनपद सीईओ आर के मंडल सहित जनप्रतिनिधि संबंधित अधिकारी एवं ग्रामीणवासी उपस्थित रहे।

भारत पेट्रोलियम कंपनी द्वारा पीएम श्री स्कूल में किया गया पौधारोपण

समय जगत, भ्याना। भारत पेट्रोलियम कंपनी द्वारा पीएम श्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भ्याना में एक वाटर कूलर भेंट किया गया जिससे कि अब बच्चों को पिने के लिए साफ स्वच्छ एवं ठंडा पेयजल मिलेगा भारत पेट्रोलियम के सहायक प्रबंधक अनिल कुमार द्वारा बताया गया कि भारत पेट्रोलियम द्वारा हर वर्ष स्वच्छता पखवाड़ा के रूप में इसी तरह कार्यक्रम किया जाता है जिसमें उपस्थित छात्र छात्राओं को स्वच्छता लाने उदबोधन मे खुद सें शुरुआत करने बात कही गई वहीं साला परिसर में सफाई भी की गई इस दौरान स्कूल प्राचार्य राम सिंह कटारिया मोहम्मद खान सहित भारत पेट्रोलियम के कर्मचारी एवं विद्यालय स्टाफ मौजूद था स्वच्छता पखवाड़ा के साथ ही पौधरोपण कार्यक्रम भी हुआ कार्यक्रम मे वरिष्ठ पत्रकार सत्यनारायण वैष्णव शिक्षक रेशमा खान प्रियंका मालवीय अनिल पालीवाल फूल सिंह अहिरवार पवन पाटीदार शिक्षक राजेश बैरागी। संचालन राजेश बैरागी ने किया इस दौरान स्कूल के छात्र-छात्राएं अन्य ग्रामीण जन मौजूद रहे।

भारत स्वाभिमान पतंजलि योग परिवार ने मनाया गुरु पूर्णिमा महोत्सव

पोलायकलां। भारत स्वाभिमान पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के तत्वावधान मे आयोजित पंच दिवसीय इंटीग्रेटेड निशुल्क योग चिकित्सा एवं ध्यान शिविर की पूर्ण आहुति तथा ग्राम रामपुर पवाड़िया की नियमित योग कक्षा का उद्घाटन किया गया। आज प्रातः 5 बजे से प्रारंभ हुए योग शिविर मे योग आसान प्राणायाम ध्यान का अभ्यास योग शिक्षक भारत स्वाभिमान न्यास शाजापुर के जिला प्रभारी कन्हैया लाल पड़ियार द्वारा कराया गया। तत्पश्चात गुरु पुर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें डॉ घनश्याम दीक्षित जिला संरक्षक भारत स्वाभिमान द्वारा योग एवं श्री मद्भागवत गीता के बारे में बताया गया आपने ज्ञान योग भक्ति योग और कर्म योग पर प्रकाश डाला गया। रामेश्वर जावरिया सह जिला प्रभारी भारत स्वाभिमान द्वारा नियमित योग नियमित यज्ञ हर घर में हो इसके बारे में जानकारी दी। वही किसान सेवा समिति के जिला प्रभारी महेश अमृतीय द्वारा जैविक खेती जहर मुक्त खेती करने पर कहा गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से ओंकार सिंह रहगल ,लक्ष्मीनारायण धाकड़ ,भारत स्वाभिमान तहसील प्रभारी पोलाय कला ,जगदीश जावरिया तहसील प्रभारी भारत स्वाभिमान अवंतीपुर बडोदिया , सीताराम चौधरी जिला कार्यकारिणी सदस्य योग शिक्षक जीवन सिंह भैंसानिया ,रोहित कुमार योग शिक्षक ,मुकेश पटेल जिला कार्यकारिणी सदस्य ,सुनील भगत सह तहसील प्रभारी भारत स्वाभिमान ,कमल मुकाती, लीलाधर चौधरी ,अरविंद ,संजय देवकरण , गणेश वर्मा ,योगेश पटेल ,हरिनारायण, योग शिक्षक राजेंद्र प्रसाद, राजेंद्र पटेल ,अर्जुन सिंह, संजय वर्मा, लखन टेलर तनुज वर्मा ,रोहित सांवरिया ,ग्राम पंचायत सरपंच पिंटू भैया एवं कई कार्यकर्ता योग साधक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जिले में संचालित योग कक्षाओं के योग शिक्षकों का एवं संगठन में निरंतर सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। यज्ञ का आयोजन किया गया अनुभव में लीलाधर चौधरी ने शुगर में लाभ एवं जगदीश जी ने कान की बीमारी में लाभ के अपने अनुभव साझा किए गए ,कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारत स्वाभिमान न्यास के जिला प्रभारी कन्हैयालाल पड़ियार द्वारा योग ऋषि स्वामी रामदेव के हर घर योग और यज्ञ ,स्वदेशी से स्वावलंबी भारत का निर्माण वृक्षारोपण ,वैदिक शिक्षा बोर्ड ,पतंजलि योगपीठ के कार्य जैविक खेती ,रिसर्च, वैदिक कन्या गुरुकुलम ,आचार्य कुलम ,वैलनेस ,योग ग्राम ,निरामय, एवं 200 करोड़ वर्ष पुरानी भारत की आध्यात्मिक संस्कृति पर कैसे भारी पड़ रहे हैं यूरोप की पश्चिमी देशों की भोगवादी व भौतिकवादी अपसंस्कृति के 200 वर्ष ,के बारे में बताया गया।

कार्यक्रम का आभार तहसील प्रभारी जगदीश जावरिया द्वारा माना गया। उपस्थित सभी लोगों ने नियमित योग करने का तथा साप्ताहिक यज्ञ का संकल्प लिया। इसी प्रकार जिले में संचालित योग कक्षाओं में भी गुरु पुर्णिमा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के बाद अगले ग्राम बिनाया में योग शिविर आयोजित करने के लिए संपर्क किया गया।

पैराडाइज स्कूल में गुरु पूर्णिमा का हुआ आयोजन

आमला। आमला स्थानीय पैराडाइज हायर सेकंडरी स्कूल आमला में आज गुरु पूर्णिमा का पर्व गरिमामय रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के द्वारा सभी ने गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आमला बी आर सी मनीष धोटे व विशेष अतिथि श्रीमती मीनाक्षी धोटे उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजन के साथ हुआ । तत्पश्चात विद्यालय की छात्राओ तथा शिक्षिकाओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं गुरु वंदना प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर धोटे जी द्वारा गुरु पूर्णिमा के महत्व को बताया तथा गुरु परंपरा के बारे में समझाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक शिक्षिका उपस्थित थे।

संजय गांधी अस्पताल में सावन कृपाल रूहानी मिशन द्वारा चिलर प्लांट स्थापित

गुढ़ (नि.प्र)। कृपाल रूहानी मिशन द्वारा चिलर प्लांट की स्थापना की गई है जिसमें मरीजों को मिलेगा 24 घंटे ठंडा पानी परमपिता परमेश्वर की असीम दया से नगर परिषद अध्यक्ष डॉ. अर्चना सिंह के सौजन्य एवं प्रेरणा से सावन कृपाल रूहानी मिशन की ओर से संजय गांधी अस्पताल, रीवा की ओपीडी के सामने चिलर प्लांट स्थापित किया गया है। इस चिलर प्लांट की क्षमता 1000 लीटर पानी को मात्र 3 घंटे में ठंडा करने की है। इससे भीषण गर्मी में 24 घंटे मरीजों और उनके परिजनों को ठंडा व सादा पानी उपलब्ध रहेगा।इस सेवा कार्य के सफल संचालन में डॉ. अर्चना सिंह के भाई श्री धीरज कुमार का विशेष सहयोग रहा। गौरतलब है कि इस मिशन के मुख्य गुरु संत राजेंद्र सिंह जी महाराज हैं। अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय कृपाल आश्रम, विजयनगर, दिल्ली में स्थित है, जबकि पश्चिमी देशों का केंद्र ÷साइंस ऑफ स्पिरिचुअलिटी सेंटर÷, नेप्रविले, इलिनॉय (उत्तर अमेरिका) में है। वर्तमान में मिशन के 2200 से अधिक केंद्र 54 देशों में कार्यरत हैं। मिशन का उद्देश्य रूहानी शांति, ध्यान, सेवा और सदाचरण के जरिए मानवता की सेवा करना है। यहां हर जाति, धर्म, उम्र का व्यक्ति ध्यान अभ्यास सीखकर जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जा सकता है। मिशन से जुड़े छात्र-छात्राओं को निष्काम सेवा के लिए प्रेरित किया जाता है।मानव सेवा मिशन के प्रमुख उद्देश्य में शामिल है। प्राकृतिक आपदाओं – जैसे कोलंबिया में ज्वालामुखी, मेक्सिको में भूकंप, भारत के कई राज्यों में बाढ़, इथियोपिया में भुखमरी व मियामी (फ्लोरिडा) में तूफान के समय मिशन ने धन व औषधीय सामग्री से सहायता की है। रीवा स्थित सावन कृपाल रूहानी मिशन शाखा बीते 8 वर्षों से लगातार संजय गांधी अस्पताल में निष्काम सेवा कर रही

है। कोरोना महामारी के दौरान निशुल्क मास्क, काढ़ा, सैनिटाइज़र वितरित किए गए। स्वस्थ हुए मरीजों को पौधे भेंट किए गए। भीषण सर्दियों में मरीजों को 24 घंटे गर्म पानी, पारसूतिया पानी, लॉन्ग-अजवाइन युक्त पानी, काली चाय, गुड़ की चाय उपलब्ध कराई गई। गर्मियों में ठंडा पानी दिन-रात उपलब्ध कराया जाता रहा है। समय-समय पर लंगर, भंडारा, वस्त्र वितरण (शॉल, चप्पल आदि) की सेवाएं भी सतत चलती रही हैं। हर दिन सेवा कार्य की शुरुआत सद्गुरुदेव परमात्मा से मरीजों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना से की जाती है।

एनएच-39 पर युवक की लाश मिलने से हड़कंप

रीवा। सीधी रोड, गुढ़ नेशनल हाईवे 39 पर तहसील मोड़, गुढ़ के समीप शुक्रवार सुबह एक लगभग 25 वर्षीय युवक की लाश मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। मॉर्निंग वॉक के दौरान स्थानीय लोगों ने सड़क किनारे शव को देखा और तत्काल पुलिस को सूचना दी।गुढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मृतक की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मामले की गहन जांच की जा रही है और सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है। स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर दहशत का माहौल है।

आवेदन के साथ सिरमौर जनपद के बागी सदस्यों का इटौरा में रहा बसेरा

रीवा। बुधवार को सिरमौर जनपद पंचायत के 19 सदस्यों द्वारा कलेक्टर को अविश्वास प्रस्ताव का आवेदन देने के बाद नये अध्यक्ष के मंथन के लिए एक हरिजन सीट से जीती जनपद सदस्य के इटौरा स्थित घर में सभी 19 सदस्यों का रात में बसेरा रहा। यह कयास लगाया जा रहा है कि इसबार भाजपा के पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी और जनपद सदस्य शांति नारायण के खेमे से रहीं पूर्व में जनपद अध्यक्ष प्रत्यासी को दरकिनार कर नये प्रत्यासी के तलाश में जनपद सदस्य जुट गये हैं। अगर सूत्रों पर भरोसा करें तो यह भी बताया गया है कि अगर अविश्वास प्रस्ताव सफल होता है तो वर्तमान जनपद अध्यक्ष सहित 3 अन्य सदस्य जनपद अध्यक्ष की उम्मीदवारी पेश कर सकते हैं। सिरमौर जनपद पंचायत के वार्ड क्रमांक 17 से निर्वाचित जनपद सदस्य सावित्री साकेत इसबार अध्यक्ष बनने की रेश में सबसे आगे हैं। बुधवार के शांम सभी 19 सदस्य इनके ही घर में रुके हुए थे। हालाकि सावित्री साकेत अब तक जिस खेमे की पक्षधर रहीं हैं वह इसबार भी मुन्नीबाई दाहिया को ही जनपद अध्यक्ष बनाने के पक्षधर हैं। इसी बीच सेमरिया क्षेत्र से निर्वाचित जनपद सदस्य श्यामकली साकेत के भी दावेदारी की खबर आने लगी है। हालाकि उक्त तीनों जनपद सदस्यों में अन्य जनपद सदस्यों को अपने विश्वास में लेने की दमखम नहीं है, जब तक कि इनके आका नहीं चाहेंगे, क्योंकि विश्वास जीतने के लिए धन-बल सबकी जरूरत पड़ती है।

सार-समाचार

पर्यावरण प्रेमी श्री दुबे की पत्नी की पुण्य तिथि पर पौधारोपण कर दी श्रद्धांजलि

सारंगपुर। नगर के पर्यावरण प्रेमी दल ने नगर को हरा-भरा रखने व पर्यावरण संरक्षण मुहिम के तहत नगर मे पौधारोपण अभियान चलाया जाता रहा है।इसी कड़ी मे शुक्रवार को पर्यावरण प्रेमी व वरिष्ठ कवि जयहिंद प्रकाश दुबे ने अपनी पत्नि सेवा निवृत प्रधान आचार्या स्व. श्रीमति चंद्रशीला दुबे की द्वितिय पुण्य तिथि पर अपने परिजनो व पर्यावरण प्रेमी दल के सदस्यो के साथ मिल कर सिविल अस्पताल परिसर मे पौधारोपण किया। वही नपाध्यक्ष पंकज पालीवाल के मुख्य अतिथि के रुप मे तथा नपा उपाध्यक्ष प्रतिनिधि निलेश वर्मा, सर्व ब्राह्मण समाज अध्यक्ष संजय शर्मा ने विशेष अतिथि के रुप मे अपनी सह भागिता दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमओ डॉ. अभिलाषा चौधरी ने की। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए नपाध्यक्ष श्री पालीवाल ने कहा कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण बहुत जरूरी है। हम सभी का फर्ज बनता है कि पृथ्वी की खूबसूरती को बनाए रखने में अपना योगदान दें। वही पौधारोपण के दौरान उपस्थित जनो ने स्व. श्रीमति दुबे के दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन अनंत दुबे ने किया तथा आभार अमित दुबे ने माना। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी विष्णु प्रसाद जोशी, नंद किशोर सोनी, शिव सिंह चौहान, राजेंद्र टेटवाल, रमेश चंद गुजरिया, रमेश चंद माहेश्वरी, गिरीश जोशी, संजय जायसवाल, दीपक विश्वकर्मा, भावेश शर्मा, शैलेन्द्र लोधी, मोहित दुबे, उदित दुबे सहित कई लोग उपस्थित थे।

कृषि दल ने लिए सोयाबीन बीज के नमूने लिए

शिवपुरी। जिले की बैराढ़ तहसील में कुछ किसानों द्वारा सोयाबीन बीज के अंकुरण न होने की शिकायत पर जिला प्रशासन द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए जांच दल गठित किया गया। कलेक्टर रवीन्द्र कुमार चौधरी के निर्देशानुसार उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास के नेतृत्व में गठित दल ने मैसर्स राजौरिया कृषि सेवा केंद्र बैराढ़ का निरीक्षण किया। निरीक्षण में पाया गया कि विक्रेता बीज अनुज्ञप्तिधारी है तथा उसने अरिहंत एग्रो सीड्स उज्जैन का प्रमाणित सोयाबीन बीज लगभग 150 क्विंटल कृषकों को विक्रय किया था। बीज भौतिक रूप से सही पाया गया एवं अंकुरण परीक्षण हेतु नमूना प्रयोगशाला भेजा गया है। शिकायत की विस्तृत जांच हेतु दल द्वारा दिनांक 9 जुलाई को ग्राम गाजीगढ़ एवं 10 जुलाई को ग्राम टोड़ा में संबंधित कृषकों के खेतों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में पाया गया कि बुवाई के तुरन्त पश्चात हुई लगातार वर्षा के कारण सोयाबीन के बीज का अंकुरण प्रभावित हुआ है। कुछ स्थानों पर बीज की अधिक गहराई, जलभराव एवं मिट्टी की ऊपरी सतह कठोर होने जैसे कारण भी सामने आए हैं। उल्लेखनीय है कि जिन खेतों में मूँगफली एवं बाजरे की फसल बोई गई थी, उनकी स्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर पाई गई है। उप संचालक कृषि ने बताया कि शिकायत के आधार पर विक्रेताकी दुकान सील की गई है एवं प्रयोगशाला परीक्षण की रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। वर्तमान में जिले में नकली बीज विक्रय की कोई स्थिति नहीं पाई गई है।

प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों को मिले स्वीकृति पत्र

समय जगत, कोतमा। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत स्वीकृत आवासों के पात्र हितग्राहियों को शुक्रवार, 11 जुलाई को नगरपालिका परिषद बिजुरी द्वारा स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए। यह कार्यक्रम नगर परिषद सभागार में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में नगर के विभिन्न वार्डों से आए हितग्राहियों को आवास योजना की स्वीकृति संबंधी दस्तावेज वितरित किए गए। पात्र नागरिकों को यह आश्वासन मिला कि शीघ्र ही उन्हें आवास निर्माण के लिए आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाएगी। इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष सहबिन पनिका, उपाध्यक्ष प्रीति सतीश शर्मा, मुख्य नगरपालिका अधिकारी पवन कुमार साहू, भाजपा मंडल अध्यक्ष रविंद्र रिंकू शर्मा, महामंत्री कैलाश कोल सहित अन्य जनप्रतिनिधि, नपाकर्मी, भाजपा कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में नगरवासी उपस्थित रहे।

पीआरटी महाविद्यालय में हर्षोल्लास से मनाया गया गुरु पूर्णिमा उत्सव

पुनीत सेन- समय जगत, कोतमा। पीआरटी महाविद्यालय अनूपपुर में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व बड़े श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के संचालक डॉ. देवेंद्र कुमार तिवारी जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन व सरस्वती वंदना से हुआ। छात्रों द्वारा गुरु की महिमा पर आधारित भजन, भाषण एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। इस दौरान विद्यार्थियों ने अपने-अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। डॉ. देवेंद्र कुमार तिवारी ने कहा कि जो ज्ञान देता है, वही वंदनीय है।

जरूरी है जनसंख्या और संसाधन में संतुलन

रीवा। शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा में फ्लैगशिप योजना ' कदम ' के अन्तर्गत लायन्स क्लब के साथ संयोजक अर्थषास्त्र विभाग एवं समाजषास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विष्व जनसंख्या दिवस क अवसर पर वैचारिक संगोश्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य मेजर डॉ विभा श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में लायंस क्लब रीवा के वरिश्ठ लायन थापर जी, अध्यक्ष गुलषन चड्ढा, श्रीमती आरती गुप्ता, वरिश्ठ लायन अतुल जैन, वालेन्तिना जैन, राजेष गुप्ता, कार्यक्रम संयोजक अर्थषास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ गीता सिंह एवं समाजषास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ रचना श्रीवासतव ने अपने विचार व्यक्त किये।आयोजित संगोश्ठी के समापन पर प्राचार्य डॉ विभा श्रीवास्तव ने जनसंख्या नियंत्रण के लिये षपथ ग्रहण कराया। इस अवसर पर वरिश्ठ लॉयन थापर जी एवं गुलषन चडढा को महाविद्यालय की ओर से षॉल श्रीफल देकर सम्मान किया गया।

लायन्स अध्यक्ष गुलषन चड्ढा ने विशय प्रवर्तन कर संस्था के समबन्ध में बताया। वरिश्ठ लायन अतुल जैन ने हर घर परिवार में दरकते जा रहे रिष्तो को सहेजने की बात करते हुए बताया कि किस प्रकार पहले षिक्षक और अभिभावक बच्चों को दण्ड भी दिया करते थे लेकिन अब तो बच्चो को डांटना भी एक अपराध मान लिया जाता है। उन्होने कहा कि हर परिवार में सदस्यों को रात्रि का भोजन हमेषा एक साथ करना चाहिये ताकि सामंजस्य बना रहता है और कई समस्याओं का समाधान भी हो जाता है। लायन्स पदाधिकारी श्रीमती आरती गुप्ता ने लगातार बढती जनसंख्या ओर घटते संसाधनों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें संतुलन जरूरी है। बढते असंतुलन से स्थितियां विस्फोटक होती जा रही है जो मानव सहित हर जीव जन्तु के लिये घातक है। महाविद्यालय की छात्रा दिव्या मिश्रा ने अत्यन्त ओजस्वी अंदाज में बढती जनसंख्या के दुश्परिणामों पर बात की।

सरपंच सचिव ने उच्च स्तरीय जांच कराने की करी मांग

जिला पंचायत सदस्य बड़ागांव में विकास कार्यों को कर रहे बाधित

गुढ़। रीवा जिले के जनपद पंचायत रायपुर कर्चुलियान क्षेत्र के कई सरपंच सचिव अपने पंचायत में विकास कार्य नहीं करवा पा रहे हैं क्योंकि क्षेत्र के कुछ ऐसे जनप्रतिनिधि हैं जो उनसे पैसे की मांग करते हैं और पैसे ना देने पर बेवजह अधिकारियों के ऊपर दबाव बनाकर शिकायत करते हुए जांच करवाते हैं ऐसा ही मामला आया है ग्राम पंचायत बड़ागांव का जहां पर जिला पंचायत सदस्य लालमणि त्रिपाठी सरपंच सचिव के ऊपर शुरू से ही अनैतिक रूप से दबाव बनाने की कोशिश कर रहे थे और लगातार गांव में हो रहे विकास कार्यों की शुरू होने से पहले ही शिकायत कर देते थे जिस तरह उन्होंने सरपंच सचिव द्वारा कराए गए कार्य सड़क एवं चेक डैम का जांच करवाया है जमीनी स्तर पर वह कार्य कराया गया है इसके बाद भी जांचकर्ताओं के ऊपर दबाव बनाकर गलत प्रतिवेदन सीईओ को सौपा गया है। सरपंच ने जानकारी देते हुए बताया कि चेक डैम का निर्माण कराए

2 साल बीत गए चेक डैम इस तरह अभी भी है जिस तरह निर्माण करवाया गया है लेकिन जिला पंचायत सदस्य लालमणि त्रिपाठी ने जांच करवाकर लगभग 13 लाख रुपए की रिकवरी बनवाने का प्रतिवेदन जिला पंचायत सीईओ के यहां भिजवाया है शिकायतकर्ताओं के इस कृत से सरपंच सचिव काफी परेशान है पूर्व में वायरल ऑडियो के माध्यम से आप लोग जान सकते हैं कि किस तरह सरपंच सचिव के ऊपर जिला पंचायत सदस्य द्वारा दबाव बनाया गया था खैर कोई बात नहीं इसका जवाब सरपंच सचिव 15 जुलाई को मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत रीवा के सामने शुरू से लेकर अंतिम तक के पूरे कारनामों का बात अवगत कराएंगे।

जांच होने के बाद महीनो तक जनपद में नहीं सौंपा गया था प्रतिवेदन: हम आपको बता दें कि जिला पंचायत सदस्य लालमणि त्रिपाठी के शिकायत के बाद बड़ागांव पंचायत में जांच करने हेतु तीन सादस्यीय टीम का गठन किया गया था टीम में पीसीओ देवबहादुर सिंह, शेषमणि कोल एवं उपयंत्री हरेंद्र साहू सामिल थे जिसमें टीम द्वारा जांच करने के बाद शिकायतकर्ता के घर में बैठकर विधिवत उन्हीं के अनुसार प्रतिवेदन रिपोर्ट तैयार किया और इसके बाद लगभग महीनों तक जनपद कार्यालय में प्रतिवेदन नहीं सोपा गया क्योंकि शिकायतकर्ता के इशारे पर सरपंच सचिव के ऊपर लगातार पैसा लेने का दबाव बनाया जा रहा था कुछ तो सरपंच सचिव पैसा दिए लेकिन डिमांड लम्बी होने कारण सरपंच सचिव कहने लगे कि हम गलत नहीं किए हैं पैसा नहीं देंगे जब सरपंच सचिव द्वारा पैसा नहीं दिया गया इसके बाद जनपद कार्यालय में विधिवत रिपोर्ट सौंप दी गई लेकिन अब इस जांच का जवाब मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत रीवा के समक्ष 15 जुलाई को सरपंच सचिव प्रस्तुत करेंगे और शिकायतकर्ता एवं जांचकर्ता के द्वारा किए गए अन्याय के बारे में विधिवत जानकारी देंगे।

38 फुट भरा आवदा डैम, कलेक्टर ने किया अवलोकन

9 हजार हेक्टयर में होती है इस बांध से सिंचाई

श्योपुर ब्यूरो। श्योपुर जिले के प्रमुख बांधो में शामिल स्टेट टाइम का बना आवदा डैम अच्छी बारिश के चलते सावन मास में 38 फीट भर गया है, बांध की भराव क्षमता लगभग 42 फीट है। कलेक्टर अर्पित वर्मा ने शुक्रवार को आवदा पहुंचकर बांध का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष गुड्डी बाई आदिवासी, अपर अतेंद्र सिंह गुर्जर, एसडीएम मनोज गढवाल, जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री चैतन्य चौहान, सीईओ जनपद राकेश शर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर अर्पित वर्मा ने जल संसाधन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि डैम पर एसडीओ एरिकेशन सहित अन्य कर्मचारी की ड्यूटी लगाई जाये तथा जलस्तर पर निगरानी रखी जायें, इसके साथ ही उन्होने एसडीएम गढवाल को निर्देश दिए कि संबंधित पटवारी, पंचायत सचिव की ड्यूटी भी लगाई जायें तथा प्रतिदिन अपडेट लिया जायें। उन्होने एरिकेशन के अधिकारियों को निर्देश दिये कि आवदा बांध

की मरम्मत कार्य के लिए नये सिरे से स्टीमेंट बनाकर उनके माध्यम से विभाग को भेजा जायें। इस अवसर पर कलेक्टर ने बांध की दीवार की मजबूती के लिए डाउन स्ट्रीम में बांध की दीवार के नीचे दो साल पूर्व किए गए राफ्ट कार्य का जायजा लिया गया एवं बांध का अवलोकन करते हुए नहर के माध्यम से होने वाले सिंचाई व्यवस्था के संबंध में जानकारी ली गई। कार्यपालन यंत्री जल संसाधन चैतन्य चौहान ने बताया कि डैम का निरीक्षण किया गया है, इसके साथ ही डैम सेफ्टी की टीम से भी निरीक्षण कराया जाएगा, वर्तमान में डैम को लेकर किसी प्रकार की गंभीर समस्या नही है तथा 38 फीट पानी डैम में भर गया है, डैम की भराव क्षमता 42 फीट तक है। उल्लेखनीय है कि आवदा डैम में सीपेज को रोकने तथा बांध की दीवार की मजबूती के लिए वर्ष 2023 में 425 मीटर लम्बी तथा 5 मीटर चौडी राफ्ट डाली गई थी। वर्तमान में बांध में 39.07 एमसीएम पानी का भराव है, जो कि बांध की क्षमता का 86.83 प्रतिशत है। बांध की कुल भराव क्षमता 45.038 एमसीएम है, वर्तमान में 42 फीट बांध में 38 फीट तक पानी भरा हुआ है। इस बांध से निकली नहर के माध्यम से लगभग दो दर्जन ग्रामों में 9 हजार हेक्टयर क्षेत्र में सिंचाई होती है, पक्के बांध की कुल लम्बाई 1158 मीटर है तथा मिट्टी पाल की लम्बाई 4 हजार 497 मीटर है, करीब 6 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले इस बांध का कैचमेंट एरिया 233 वर्ग किलोमीटर है, यह जिले का प्रमुख बांध है, जिसे सिंधिया स्टेट में 1934 में बनाया गया था, यह बांध रबी सीजन में किसानों की सिंचाई आवश्यकताओं की पूर्ति करता आ रहा है।

बुरहानपुर के मेक्रो विज़न एकेडमी में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा का उत्सव

बुरहानपुर। मेक्रो विज़न एकेडमी में गुरुवार को गुरु पूर्णिमा का उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।कार्यक्रम का उद्घाटन और अतिथियों का स्वागत लावण्या गुप्ता एवं आकर्षी अग्रवाल ने विधिवत शुरुआत के लिए स्कूल के प्राचार्य श्री जसवीर सिंह परमार, मिस. अंतरा चौकसे, श्रीमती शीतल पोपली, श्रीमती प्रतिभा नायर और डॉ. अरुण शर्मा, श्री विजय सुखवानी, डॉ.संतोष सिलोरिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती माँ की तस्वीर पर माल्यार्पण कर की। छात्रावास के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम जिनमें कला, नृत्य, भारतीय संस्कृति और नाट्य प्रस्तुतियों संगीतमय प्रस्तुति गुरु वंदना, कविता - आराध्या सोनी, नृत्य - पापा विशेष, नाटक संगीतमय अभिनय - पहलगाम हमला, संगीतमय प्रस्तुति - मैं नचदी और सिंदबाद, नृत्य - चार्ली चैपलिन, गर्ल्स आफ्टर वॉर - महाभारत, कविता - शिवेंद्र द्विवेदी, स्त्री -2 हॉरर नाटक - आनंद कथा, चिन्मय सर, संगीतमय प्रस्तुति - किन्ना सोना और अंखियां आदि खूबसूरत कार्यक्रम ने सभी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। स्कूल के आर्ट डिपार्टमेंट जिसमें, रोनी सर, आकाश सर, सुमेध सर, ऋषि सर और ऑर्केस्ट्रा टीम ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंच का संचालन - प्रेरणा बाविस्कर, लावण्या डहारे, प्रत्यक्ष नागर एवं शिवम सिंह पटेल, सौम्या ठाकुर, रौनक सोलंकी, रिद्धि छाबरिया एवं अनन्या शर्मा, अनुभव राठौड़, अंशुल शर्मा, जिया करोलिया, तन्वी धनकानी, चेष्ठा पाटीदार, इरिया जैन, अदिति परसेडिया, चारु कटारे, नीलांश खरे, आर्यन कंगाली, समर्थ गुगनानी, इशित्वा सिंघई, अंश पटेल एवं अंशू साहू, राजवीर जैन सराफ, अक्षत श्रीवास्तव, आदि अग्रवाल, विराज खंडेलवाल ने संयुक्त रूप से किया।

सीवर लाइन ने बिगाड़ी शहर की सूरत, मोहल्ले वाले परेशान

सुबह से हो रही बारिश के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त

रीवा। सावन का पहला दिन और सुबह से ही आसमान मेघों से घिरा रहा। करीब सुबह 5 बजे से शुरू हुई मूसलधार बारिश ने रीवा शहर और आसपास के ग्रामीण अंचलों में जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया। जहां एक ओर किसानों के चेहरे बारिश से खिले हैं, वहीं दूसरी ओर शहर की अधूरी सीवर व्यवस्था और जल निकासी की बदहाली ने आम लोगों का जीना दूभर कर दिया है।शहर में लगभग 8 घंटे से हो रही लगातार बारिश के कारण सड़कों पर पानी भर गया है। प्रमुख मार्गों पर यातायात ठप हो गया है। स्कूल-कॉलेज जाने वाले छात्रों, ऑफिस जाने वाले कर्मचारियों और दिहाड़ी मजदूरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। कई जगह दोपहिया वाहन पानी में फंस गए तो कुछ स्थानों पर वाहन पलटने की घटनाएं भी सामने आई। जिले के मऊगंज, मनगवां, जवा, और नईगढ़ी क्षेत्रों से भी भारी बारिश की खबरें आ रही हैं। कई कच्चे घर गिरने की सूचना है। ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब, नाले और पुल-पुलिया ओवरफ्लो हो रहे हैं जिससे आवागमन पूरी तरह ठप है। मऊगंज तहसील के हनुमना गांव में स्थित एक स्कूल की छत टपकने से छात्रों को बाहर बैठना पड़ा। वहीं, मनगवां क्षेत्र में एक कच्चा मकान गिरने से एक परिवार के तीन लोग घायल हो गए, जिन्हें जिला अस्पताल लाया गया।

किसानों ने जताई राहत की उम्मीद: बारिश से सबसे अधिक राहत किसानों को मिली है। लंबे समय से बारिश की प्रतीक्षा कर रहे किसान अब खेतों में बुवाई के लिए तैयार हैं। रीवा, सिरमौर, जवा और त्योंथर क्षेत्र के धान ी फसल के लिए यह बारिश संजीवनी के समान है। सिरमौर के किसान भोलाराम पटेल कहते हैं बारिश ने जान फूंक दी है। अब खेतों में बुवाई में तेजी आएगी। पर अगर ऐसे ही पानी भरता रहा तो गांव के अंदर भी समस्या होगी।

बिजली सप्लाई भी बाधित, कई क्षेत्रों में ब्लैकआउट: तेज बारिश और हवाओं के कारण रीवा शहर और आसपास के क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में ट्रांसफॉर्मर जलने और पोल गिरने की खबरें भी सामने आई हैं। विद्युत विभाग के अधीक्षण यंत्री ने बताया कि बारिश के चलते कई फीडरों में फॉल्ट आया है, जिसे दुरुस्त करने के लिए टीम को भेजा गया है। परंतु बारिश के कारण सुधार कार्यों में विलंब हो रहा है। लगातार हो रही बारिश और नगर निगम की निष्क्रियता से लोगों में भारी आक्रोश है। सोशल मीडिया पर भी लोग निगम की कार्यप्रणाली की आलोचना कर रहे हैं।

गुढ़ थाना के रगनिया में बहे युवक के परिजनों से मिले गुढ़ थाना प्रभारी शैल यादव, दी समझाईश

गुढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत भटिगंवा रगनिया मार्ग के पुल से बहे युवक की तलास में आई रेस्क्यू टीम मौके पर थाना प्रभारी शैल यादव, सहायक उपनिरीक्षक सुरेश, साकेत प्रधान आरक्षक अयोध्या प्रजापति, राकेश वर्मा, सत्यदेव पांडेय मौजूद एनडीआरएफ प्रभारी ने बताया कि नदी में पानी ज्यादा होने के कारण रेस्क्यू में आएगी दिक्कत पानी कम होने के बाद की जाएगी रेस्क्यू पानी का बहाव तेज होने के कारण टीम को रहेगा खतरा कल सुबह पानी कम होने के बाद रेस्क्यू के लिए उतरेगी टीम।

संपादकीय

जनसंख्या नियंत्रण के लिये जागरुकतापूर्ण प्रयास हैं जरूरी

जनसंख्या नियंत्रण देश ही नहीं बल्कि दुनियाभर में बड़ा मुद्दा है तथा इस दिशा में काफी प्रयास भी किये जा रहे हैं। जनसंख्या संबंधित समस्याओं पर वैश्विक चेतना जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया जाता है। भारत के संदर्भ में देखें तो तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ही हम सभी तक शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों को पहुंचाने में पिछड़ लेकिन बढ़ती आबादी के कारण ये सभी कार्यक्रम 'ऊंट के मुंह में जीरा' ही साबित हुए। बढ़ती जनसंख्या के कारण ही देश में आबादी और संसाधनों के बीच असंतुलन बढ़ता जा रहा है। वास्तविकता यही है कि विगत दशकों में देश की जनसंख्या जिस गति से बढ़ी, उस गति से कोई भी सरकार जनता के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने की व्यवस्था करने में सफल हो ही नहीं सकती थी।

आज देश की बहुत बड़ी आबादी निम्न स्तर का जीवन जीने को विवश है। देश में करीब 40 प्रतिशत आबादी आजादी के बाद से ही गरीबी के आलम में जी रही है। गरीबी में जीवन गुजार रहे ऐसे बहुत से लोगों की यही सोच रही है कि उनके यहां जितने ज्यादा बच्चे होंगे, उतने ही ज्यादा कमाने वाले हाथ होंगे किन्तु यह सोच वास्तविकता के धरातल से परे है। लगातार बढ़ती महंगाई के जमाने में परिवार बड़ा होने से कमाने वाले हाथ ज्यादा होने पर जितनी आय बढ़ती है, उससे कहीं ज्यादा जरूरतें और विभिन्न उत्पादों की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिनकी पूर्ति कर पाना सामर्थ्य से परे हो जाता है। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की सफलता के लिए सर्वाधिक जरूरी यही है कि घोर निर्धनता में जी रहे ऐसे लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के महत्व के बारे में जागरूक करने की ओर खास ध्यान दिया जाए क्योंकि जब तक इस कार्यक्रम में इन लोगों की भागीदारी नहीं होगी, तब तक लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है।

देश में जनसंख्या वृद्धि का मुकाबला करने के लिए पिछले काफी समय से कुछ कड़े कानून बनाने की मांग हो रही है लेकिन इस दिशा में कुछ राज्य सरकारें दो से ज्यादा बच्चों वाले परिवारों को सरकारी नौकरी तथा स्थानीय निकाय चुनावों में उम्मीदवारी से अयोग्य अघोषित करने जैसे जिस तरह के उपायों पर विचार कर रही हैं, उन्हें तर्कसंगत नहीं माना जा सकता। हालांकि जनसंख्या वृद्धि मौजूदा समय में गंभीर चुनौती है लेकिन ऐसे उपायों को संवैधानिक नजरिये से भी तर्कसम्मत नहीं माना जाता। चीन में 1980 से पहले केवल एक बच्चा पैदा करने की अनुमति थी, जिसका उल्लंघन करने पर दम्पति को न केवल सरकारी योजनाओं से वंचित कर दिया जाता था बल्कि सजा भी दी जाती थी लेकिन वहां यह नीति सफल नहीं हुई। दरअसल वहां लोगों की सामान्य प्रजनन दर में निरन्तर गिरावट आ रही है और कुछ विशेषज्ञों के मुताबिक यही स्थिति भारत में भी होनी है। ऐसे में जनसंख्या नियंत्रण के लिये लोगों का जागरुकतापूर्ण सहयोग जरूरी है।

सूची में सुधार पर सुप्रीम सहमति सराहनीय

नजरिया

बिहार में मतदाता सूची सुधार पर सुप्रीम कोर्ट की हरी झंडी सिर्फ एक न्यायिक फैसला नहीं, बल्कि लोकतंत्र के मूल्य को पुष्ट करने वाला ऐतिहासिक एवं प्रासंगिक निर्णय है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को बिहार में मतदाता सूची की समीक्षा के लिए आधार, राशन और वोटर कार्ड को भी मान्यता देने का सुझाव देकर आम लोगों की मुश्किल हल करने की कोशिश की है। इससे प्रक्रिया आसान होगी और आशंकाओं को कम करने में मदद मिलेगी। बेशक, फर्जी नाम मतदाता सूची में नहीं होने चाहिए लेकिन ऐसे अभियानों के दौरान आयोग का जोर ज्यादा से ज्यादा नाम वोटर लिस्ट से निकालने के बजाय, इस पर होना चाहिए कि एक भी नागरिक चुनावी प्रक्रिया में शामिल होने से वंचित न रह जाए। विपक्ष को चाहिए कि वह इस फैसले को राजनीतिक हार न माने, बल्कि इसे एक अवसर माने, जनविश्वास अर्जित करने का, लोकतंत्र में आस्था बढ़ाने का और सबसे जरूरी, राष्ट्रहित को राजनीति से ऊपर रखने का। मतदाता सूची में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का कार्य केवल बिहार ही नहीं, देश के अन्य राज्यों में प्राथमिकता के आधार पर प्रारंभ करना चाहिए।

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय सर्वोपरि होता है। चुनाव आयोग यदि चुनाव कराने को तैयार है, और इसकी जुड़ी किन्हीं प्रक्रियाओं में कोई त्रुटि या खामी है तो उसका सुधार करना संविधान सम्मत है, तो फिर इस पर प्रश्नचिन्ह लगाने का अधिकार किसी भी राजनीतिक दल को नहीं होना चाहिए। लेकिन जो प्रश्न जनता के मानस को उद्वेलित करता है, वह यह है कि विपक्ष बार-बार चुनावी प्रक्रियाओं, राष्ट्रीय हितों या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी एकमत होकर विरोध करता है, आखिर क्यों? बिहार में एसआईआर को लेकर जो याचिकाएं और बहसें सामने आई, उनमें एक प्रमुख तर्क यह था कि समय उपयुक्त नहीं है, सरकार अस्थिर है, या सामाजिक समीकरण तैयार नहीं हैं। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जनता को प्रतिनिधित्व देने का अधिकार सर्वोपरि है। लेकिन त्रुटिपूर्ण या फर्जी मतदाता सूची से चुनाव कराना भी लोकतंत्र का अपमान है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि देर-सवेर नहीं, संवैधानिक कर्तव्य को समय पर निभाना जरूरी है।

अदालत ने एसआईआर पर कोई आदेश नहीं दिया है, लेकिन अपने इरादे की ओर इशारा तो कर ही दिया है। अदालत ने टाइमिंग को लेकर जो सवाल उठाया, वह उचित प्रतीत होता है। बिहार में इसी साल के आखिर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इतनी विस्तृत कवायद के लिए शायद उतना वक्त न मिल पाए, जितना मिलना चाहिए। बिहार में एसआईआर को लेकर जो असमंजस है, उसकी एक वजह निश्चित ही टाइमिंग है। जिनके पास जरूरी डॉक्युमेंट नहीं हैं, वे इतनी जल्दी उनका इंतजाम नहीं कर पाएंगे। हालांकि आयोग ने भरोसा दिलाया है कि किसी भी व्यक्ति को भी अपनी बात रखने का मौका दिए बिना मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जाएगा। वैसे बिहार में चुनाव को देखते हुए ही फर्जी मतदाताओं की संख्या बढ़ी या तथाकथित राजनीतिक दलों ने इन फर्जी मतदाताओं को बढ़ाया है। ऐसे में इन फर्जी मतदाताओं पर कार्रवाई अपेक्षित है। यह मामला केवल बिहार तक सीमित नहीं रहना चाहिए। दूसरे राज्यों में मतदाता सूचियों की समीक्षा किस तरह होगी, यह बिहार में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। ऐसे में स्वाभाविक ही नजरें इस बात पर टिकी हैं कि सुप्रीम कोर्ट में आखिरकार इस प्रक्रिया का कैसा स्वरूप तय होता है? भारतीय राजनीति में विपक्ष का कार्य सरकार की नीतियों पर निगरानी रखना है, आलोचना करना है, लेकिन वह आलोचना रचनात्मक होनी चाहिए, राष्ट्र-विरोधी नहीं। आज हम देख रहे हैं कि आर्टिकल 370 हटाना हो, नागरिकता संशोधन अधिनियम-सीएए, राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर-एनआरसी जैसे कानून हों, अग्निपथ योजना हो, या राम मंदिर निर्माण-लगभग हर मुद्दे पर विपक्ष ने एकमत होकर विरोध किया है। चाहे चीन या पाकिस्तान से जुड़ी संवेदनशील मसले हों, या फिर राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्णय, विपक्ष अक्सर उन बिंदुओं पर एक सुर में सरकार का विरोध करता है, जबकि ऐसे राष्ट्रीयता के मुद्दों पर विपक्ष को सरकार एवं देश के साथ एकजुटता दिखानी चाहिए। यह संयोग नहीं, एक दूषित राजनीतिक रणनीति बनती जा रही है कि 'जो सरकार करे, उसका विरोध करो', चाहे मुद्दा देशहित का ही क्यों न हो। इन स्थितियों में आम जनता का एक बड़ा सवाल है कि विपक्ष देश के साथ है या सिर्फ सत्ता की भूख के साथ? क्या चुनाव प्रक्रिया पर विरोध करना लोकतंत्र का मज़ाक नहीं है? क्या न्यायपालिका के निर्णयों को चुनौती देना सिर्फ स्वार्थ की राजनीति नहीं? क्या राष्ट्रीय मुद्दों पर सरकार के साथ खड़े होने से विपक्ष की राजनीति कमजोर हो जाएगी? जब विपक्ष सिर्फ विरोध करने के लिए विरोध करता है, तो उसका नैतिक बल कमजोर होता है, और जनता का विश्वास टूटता है।

भारतीय राजनीति को अब रचनात्मक विपक्ष की ज़रूरत है, ऐसा विपक्ष जो सत्ता में नहीं है, फिर भी राष्ट्र के लिए सत्ता के साथ खड़ा हो सकता है। जो यह समझ सके कि लोकतंत्र सरकार और विपक्ष दोनों से चलता है, लेकिन राष्ट्र सबसे ऊपर है। बिहार में चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट की अनुमति इस बात का प्रतीक है कि संस्थाएं अभी भी न्याय और संवैधानिकता की रक्षा कर रही हैं। लेकिन विपक्ष यदि इस निर्णय पर भी नकारात्मक रवैया अपनाता है, तो यह जनता की आकांक्षाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और विकासशील भारत की दिशा के विरुद्ध होगा। विपक्ष को चाहिए कि वह अपनी राजनीति को जनहित से जोड़े, जनविरोध से नहीं। विपक्ष यदि राष्ट्रहित में सोचने की दिशा में खुद को परिवर्तित नहीं करता, तो वह धीरे-धीरे प्रासंगिकता खो देगा। भारतीय लोकतंत्र की नींव निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी चुनावों पर टिकी होती है। इसी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मज़बूत बनाने की दिशा में बिहार में चुनाव आयोग द्वारा शुरू किया गया मतदाता सूची सुधार अभियान हाल ही में राष्ट्रीय बहस का केंद्र बना। लेकिन जिस बात ने सबसे अधिक ध्यान खींचा, वह यह है कि इस पूरी कवायद के दौरान विपक्ष एक बार फिर एकजुट होकर इसका विरोध करता नजर आया, भले ही मामला राष्ट्रहित और लोकतंत्र की मजबूती से जुड़ा हो। बिहार में राज्य निर्वाचन आयोग ने वोटर लिस्टों को दुरुस्त करने, फर्जी वोटरों की छंटनी, और नए योग्य मतदाताओं को जोड़ने का जो कार्य प्रारंभ किया, वह एक सामान्य प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि एक लोकतांत्रिक शुद्धिकरण था। यह सुधार न केवल चुनावों को पारदर्शी बनाता है, बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा भी करता है। परन्तु कुछ राजनीतिक दलों ने इस प्रक्रिया पर आपत्ति जताई और इसे जातीय आंकड़ों, राजनीतिक संतुलन और चुनावी गणित से जोड़कर कोर्ट का रुख किया। सुप्रीम कोर्ट ने साफ शब्दों में कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण संविधान सम्मत प्रक्रिया है और इसे बाधित नहीं किया जा सकता। अदालत ने चुनाव आयोग की कार्रवाई को न केवल वैध बताया, बल्कि उसे लोकतंत्र के लिए आवश्यक भी बताया। यह फैसला यह भी दर्शाता है कि अब समय आ गया है जब चुनावी ईमानदारी को राजनीतिक शोरगुल और वोट बैंक की राजनीति के शोर में दबाया नहीं जा सकता। विपक्ष की प्रतिक्रिया लगभग स्वचालित होती जा रही है, चाहे मुद्दा हो आर्थिक सुधार का, रक्षा नीति का, विदेश नीति का, या अब मतदाता सूची सुधार का। प्रश्न यह उठता है कि क्या हर सुधार प्रक्रिया, चाहे वह कितनी भी लोकतांत्रिक या पारदर्शी हो, विपक्ष के लिए मात्र एक राजनैतिक खतरा है? विपक्ष का यह रवैया यह दर्शाता है कि उसे संवैधानिक संस्थाओं पर भरोसा कम और अपनी राजनीतिक गणनाओं पर भरोसा अधिक है। एक सामान्य नागरिक के लिए सबसे बड़ा अधिकार है वोट देना। यदि कोई सुधार प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि एक भी फर्जी वोटर सूची में न हो, कोई भी योग्य मतदाता छूटे नहीं, जाति, धर्म या राजनीति से ऊपर उठकर नागरिकता के आधार पर मतदाता सूची बने, तो फिर उसका विरोध क्यों?विपक्ष इस डर से ग्रस्त है कि यदि मतदाता सूची साफ-सुथरी हो गई, तो उनके कथित परंपरागत वोट बैंक कमजोर हो सकते हैं। उन्हें डर है कि जातीय और क्षेत्रीय समीकरण बदल सकते हैं। लेकिन यह तर्क लोकतंत्र के मूल सिद्धांत के विरुद्ध है। लोकतंत्र 'जो है, उसे प्रतिबिंबित करे', न कि 'जो चाहिए, उसे निर्मित करे'।

भारतीय संस्कारों से संपूर्ण विश्व हो रहा है आलोकित

किशन भावनानी

वैश्विक स्तर पर आज भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा, भारतीय सभ्यता, वैचारिक अधिष्ठान रूपी आवाज़ अब केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है, यह विश्व भर में फैल रहे हैं और पूरे विश्व को जोड़ रहे हैं इसका एहसास हमें अब होने लगा है, क्योंकि जब हमने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और टीवी चैनलों पर भारत के पीएम के अनेक विदेश दौरों में देखा कि किस तरह वहां पीढ़ियों से बसें भारतीय मूल के लोगों के दिल में उनके पुरखों द्वारा भारत से लाए लोकतांत्रिक मूल्यों, कर्तव्यों से संस्कारों की सरिता का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा जब वे भारतीय पीएम के प्रति इतनी उत्सुकता और अपनी पुरखों की मिट्टी से कोई उनके देश आता है तो उनके दिल के कोने से करोड़ों खुशियों के फव्वारे होते हैं यह हम देखते आ रहे हैं। ऐसा व्यक्ति जिसका कोई पूर्वज भारतीय नागरिक था और जो वर्तमान में अन्य देश की नागरिकता या राष्ट्रीयता धारण करता है/करती है। इन लोगों के पास उसी देश का पासपोर्ट होता है। चूंकि इन लोगों के पास विदेशी पासपोर्ट होता है। कल्पना चावला कमला हैरिस के काम और नाम तो हम जानते ही हैं इसके अलावा,अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ और नासा के वैज्ञानिक कमलेश लुल्ला अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस से पहले एक प्रतिष्ठित अमेरिकी फाउंडेशन की तरफ से सम्मानित किए गए उन 34 अप्रवासियों में से हैं, जिन्होंने अपने योगदान और कार्यों के माध्यम से अमेरिकी समाज और लोकतंत्र को समृद्ध और मजबूत किया है। गोपीनाथ और लुल्ला न्यूयॉर्क के कार्नेगी कॉरपोरेशन की तरफ से नामित '2021 ग्रेट इमिग्रेंट्स (महान प्रवासी) की लिस्ट में शामिल हैं।ये एक गैर सरकारी संगठन है।विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारतीय समुदाय का दबदबा कायम रखते हुए भारतीय मूल के छह किशोरों ने अमेरिका का प्रतिष्ठित डेविडसन फेलो स्कॉलरशिप हासिल कर ली है। सिंगापुर में भारतीय मूल के सीनियर सेल्स एग्जीक्यूटिव शक्तिबालन बालथंडौथम को अपने लीवर का एक हिस्सा एक साल की बच्ची को दान करने के लिए द स्ट्रेट्स टाइम्स सिंगापुरियन ऑफ द ईयर 2021 का पुरस्कार मिला है, जिससे वह पहले कभी नहीं मिले थे। अमेरिका में मिडिल स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित होने वाली एक प्रमुख विज्ञान और इंजीनियरिंग प्रतियोगिता में भारतीय मूल के बच्चों ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। प्रतियोगिता के पांच विजेताओं में भारतीय मूल के चार बच्चे शामिल हैं, जिसमें 14 वर्षीय भारतीय मूल के लड़के ने प्रतियोगिता में शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है।अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है।

भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। अब जबकि हरेक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, भारत बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के द्वारा भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं। पीआईबी के अनुसार भारतीय प्रधानमंत्री ने एक कार्यक्रम में कहा, एक भारतीय दुनिया में कहीं भी रहे, कितनी ही पीढ़ियों तक रहे, उसकी भारतीयता, उसकी भारत के प्रति निष्ठा, लेश मात्र भी कम नहीं होती। वो भारतीय जिस देश में रहता है पूरी लगन और ईमानदारी से उस देश की भी सेवा करता है। जो लोकतांत्रिक मूल्य, जो कर्तव्यों का ऐहसास उसके पुरखे भारत से ले गए होते हैं, वो उसके दिल के कोने में हमेशा जीवंत रहते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत एक राष्ट्र होने के साथ ही एकमहान परंपरा है, एक वैचारिक अधिष्ठान है, एक संस्कार की सरिता है।भारत वो शीर्ष चिंतन है- जो वसुधैव कुटुंबकम की बात करता है। भारत दूसरे के नुकसान की कीमत पर अपने उत्थान के सपने नहीं देखता। भारत अपने साथ सम्पूर्ण मानवता के, पूरी दुनिया के कल्याण की कामना करता है। इसीलिए, कनाडा या किसी भी और देश में जब भारतीय संस्कृति के लिए समर्पित कोई सनातन मंदिर खड़ा होता है, तो वो उस देश के मूल्यों को भी समृद्ध करता है। इसलिए, आप कनाडा में भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हैं, तो उसमें लोकतन्त्र की साझी विरासत का भी सेलिब्रेशन होता है।

सरलता से सुशोभित हैं भगवान शिव

डॉ. रीना रवि मालपानी

आदि अनंत अविनाशी शिव की महिमा तो सर्वथा विख्यात है। महादेव की संज्ञा से सुशोभित शिव के जीवन में कितनी सरलता है यह तो अवर्णनीय है। कुबेर को लक्ष्मी के खजांची बनाने वाले शिव साधारण वेषभूषा धारण करते है। कर्पूर की तरह गौर वर्ण शिव शरीर पर भस्म रमाते है। प्रायः यह देखा जाता है कि विवाह में दूल्हा स्वयं को अनेक आभूषणों से सुसज्जित करता है, परंतु शिव जैसे सदैव दृष्टिगोचर होते है वैसे ही वह विवाह में सबके समक्ष प्रत्यक्ष हुए। सत्यम शिवम सुंदरम रूप शिव का कल्याण स्वरूप है।

शिव का लिंग स्वरूप ब्रह्मांड का प्रतीक है। शिव को संहार का देवता कहा जाता है, परंतु जब कालकूट विष से पृथ्वी पर संकट आया तो उन्हीं महादेव ने विष को ग्रहण कर सभी को चिंता मुक्त किया। शिव ही तो है जिन्होने विष को ग्रहण कर एक और उपनाम नीलकंठ प्राप्त किया। यह वही शिव है जिन्होने श्री हरि विष्णु के कमल अर्पित करने पर उन्हें सुदर्शन चक्र प्रदान किया, जिसका प्रयोग श्री हरि नारायण सृष्टि के कुशल संचालन में करते है। उमापति महेश्वर शिव सदैव योग एवं ध्यान मुद्रा में ही रहते है, क्योंकि ध्यान ही शांत चित्त एवं आनंद स्वरूप प्रदान करता है। शिव प्रत्येक स्वरूप में अपनी श्रेष्ठता से शोभायमान होते है चाहे वह योगी हो, सन्यासी हो या गृहस्थ। शिव तो ओढर दानी है, अर्थात अनोखे दाता। आशुतोष शिव को प्रसन्न करना भक्त के लिए सबसे सरल है। शिव की सरलता तो उनको अर्पित सामाग्री से ही सिद्ध होती है, जो भी सामग्री सरलता से उपलब्ध हो वही शिव को अर्पित कर दो और भोलेनाथ से मनोवांछित फल प्राप्त कर लो। राजा हो या रंक शिव के लिए तो सभी समान है, मात्र जलधारा अर्पित करने से शिव संतुष्ट हो जाते है। यत्र-तत्र उगने वाला धतूरा, आक शिव को समर्पित किया जाता है। शिव की सरलता तो अतुलनीय है। एक बिल्वपत्र अर्पित करने पर भक्त के तीन जन्मों के पाप हर लेते है। अनायास भी शिव नाम मुख से उच्चरित हो गया तो वही जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो जाएगा। शिव के बारह ज्योर्तिर्लिंगों का स्मरण करने मात्र से सात जन्मों के पाप क्षय हो जाते है। शिव की प्रतिमा या लिंग स्वरूप के अभाव में पार्थिव शिवलिंग का निर्माण कर पूजन एवं अर्चन कर भी भक्त द्वारा मनोवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है। इतनी सहजता तो अन्यत्र दुर्लभ है, इसलिए चन्द्रशेखर, उमापति अत्यंत वंदनीय है। भक्त ने शिव को जहां विराजमान किया और जो नाम प्रदान किया वह शिव सहर्ष स्वीकार कर लेते है। ज्योतिर्लिंग में भक्तों की तपस्या से उनकी मनोकामना पूर्ति के लिए आशुतोष सदैव प्रत्यक्ष रूप में विराजमान हो गए। राम नाम की अमृत धारा का रसास्वादन करने वाले शिव रामेश्वर एवं गोपेश्वर महादेव के रूप में भी दर्शन देते है। शिव भक्त का कल्याण तो श्री हरि नारायण भी करते है। रावण की शिव भक्ति का ही परिणाम था कि प्रभु श्री राम के हाथों उसे मुक्ति प्राप्त हुई। श्री हरि विष्णु भी कहते है कि जो शिव की आराधना करता है वह नारायण की कृपा का भी भागी होता है क्योंकि हरि और हर एक दूसरे को आराध्य मानते है। आशुतोष शिव शंकर भोलेनाथ गौरीपति प्रेम की भी उत्कृष्टता सिद्ध करते है। अंतर्यामी शिव सती के हठ को सहज स्वीकार करते है और शक्ति स्वरूपा माँ भगवती को भी कठिन तपस्या से ही प्राप्त होते है। अर्धनारीश्वर स्वरूप में शिव-शक्ति की समानता को उजागर करते है। स्वर्ण भवन निर्माण के पश्चात भी अपने दानी स्वरूप के कारण कैलाश में निवास करते है। सरलता से जीवन को साध्य बनाने वाले शिव की तो महिमा ही न्यारी है। कंठ के भीतर भी विष और बाहर भी विष विद्यमान है, इसके बाद भी वे एकाग्र और ध्यानचित्त दिखाई देते है। ऐसे आनंद स्वरूप भगवान शिव ही हो सकते है। ऐसी गृहस्थी किसकी होगी जिसमें सभी विपरीत स्वभाव वाले पशु-पक्षी सर्प, मोर, चूहा, शेर, बैल यह सभी प्रेम पूर्वक रहते है। शिव का अनुग्रह यदि जीवन में प्राप्त हो जाए तो जीवन में और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाएगा। हम सदैव जीवन में इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति में लगे रहते है, परंतु उससे कहीं अधिक हम उस ईश्वरीय सत्ता से जुड़कर परम आनंद या अन्तर्मन की प्रसन्नता प्राप्त कर सकते है। शिव ने सब कुछ त्याग कर सरलता को आत्मसात किया। इच्छा मात्र से प्रकट करने वाले भगवान महादेव शिव शंकर त्याग की उत्कृष्टता को स्वीकार करते है। तांडव नृत्य करने वाले नटराज सदैव शांत चित्त स्वरूप में प्रत्यक्ष होकर भक्तों के कल्याण एवं आनंद का मार्ग प्रशस्त करते है। सावन शिव का प्रिय माह है, जहाँ भक्ति का फल भी अनंत गुना हो जाता है, तो क्यों न इस सावन भोलेनाथ से जुड़कर उनके गुणों को आत्मसात कर हम भी जीवन को आनंद स्वरूप बनाएँ।

विभाजित परिदृश्य में भारत की संयमपूर्ण नीति

एसएस मेहता

बढ़ते तनावों और पीछे हटती सच्चाइयों के युग में, भारत अपने शांत विमर्श के साथ, अपनी आज़ादी के 80 वर्ष पूरे करने जा रहा है। हमारी यात्रा एक ऐसा वृत्तांत रही है, जिसे फिर से बताने की ज़रूरत है। भले ही अपनी सौवीं वर्षगांठ की परिकल्पना, शक्ति का विस्तार करने में नहीं, बल्कि अपने उद्देश्यों को और गहराई देने में है। जहां अन्य राष्ट्रों में प्रभुत्व बनाने के लिए होड़ मची है, भारत अपनी राह पर कायम है- विचारधारा में धंसा हुआ नहीं, बल्कि सभ्यतागत नैतिकता की गहरी जड़ों से जुड़ा, जिसे हम 'युमैनशिप' अर्थात धर्मनीति के नाम से जानते हैं- सतत राष्ट्रीय आचार संहिता, स्मृति द्वारा आकार पाई, समदृष्टि सहित और मूलतः संयम वाली। यह कोई जुमला नहीं; हमारा वह व्यवहार है, जिसे हम तब भी कायम रखते हैं जब कोई न देख रहा हो और कैसे हम सबके सामने होने के बावजूद खुद को रोक लेते हैं। यह नैतिकता हमने अपने सबसे प्राचीन शब्दकोष से पाई है। दुनिया युद्ध और इसकी चेतावनियों के बीच डगमगा रही है। गाजा खून में सना है; यूक्रेन बिखरने की कगार पर है; ईरान और इस्राइल अपने संयम की सीमाएं नाप रहे हैं। व्यापार बल-प्रयोग का औजार बन गया है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को हथियार बनाया जा रहा है। तकनीक उपकरण और ख़तरा, दोनों बन गई है। परमाणु संयम, लापरवाही भरी बयानबाज़ी में बदल गया है। संयुक्त राष्ट्र पंगु हुआ पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा समिति के स्थाई सदस्य देश तभी कार्रवाई करते हैं, जब उनके हित आपस में मिलें। संतुलन का भरोसा देने वाले तंत्र को साजिशन मामलों से अलग रखा जा रहा है। 1948 से 2025 तक, हमारे विकल्प सतत कहानी बताते हैं। हम लाहौर की दहलीज़ पर जाकर थम गए, जीता हुआ हाजी पीर इलाका लौटा दिया, और पाकिस्तानी सेना को दूर तक खदेड़ने के बावजूद मुज़फ़्फ़राबाद पर कब्ज़ा नहीं किया। सीमा पार किए बिना कारगिल पर फिर से कब्ज़ा कर लिया। हमने ढाका को आज़ाद करवाया और बाद में उन 90,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों को स्वदेश भेजा, जिनके साथ जिनेवा संधि के तहत उदारतापूर्ण व्यवहार किया गया। मदद की पुकार पर हम मालदीव और श्रीलंका गए। परमाणु मामलों में, कगार की नौबत बनाए बिना नो फर्स्ट यूज़ सिद्धांत का पालन करते आए हैं। हर मामले में, भारत के पास आगे बढ़ने की पूरी कूवत थी, लेकिन समदृष्टि को न तजने का उसका इरादा ज़्यादा मज़बूत रहा। जहां दूसरे बीच रास्ते में पीछे हट गए,वहीं भारत स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ अंत तक गया। 1962 में, हिंदी-चीनी भाई-भाई का दोस्ताना उस वक्त जोर-ज़बरदस्ती में बदल गया जब चीन, जो खुद प्राचीन सभ्यता है और जिसके साथ हम शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व चाहते थे, उसने वार्ता की बजाय धोखा चुना। युद्ध त्वरित रहा। जब धूल छंटी, तो एक सवाल ज़रूर उठा ः चीन ने अपनी शिष्टता तज क्या पाया और सह-अस्तित्व की नैतिकता त्यागकर क्या खोया? भरोसा टूट गया। लॉर्ड कर्जन ने 1907 में ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में 'फ्रंटियर्स' नामक सालाना व्याख्यान में कहा था ः 'सहमति वाली स्पष्ट सीमारेखा की बजाय असहमति वाली सीमाओं से ज़्यादा हासिल किया जा सकता है'। एक सदी बाद, लगता है कि चीन ने वह सिद्धांत आत्मसात कर लिया। आज, भारत के संयम की परीक्षा और दिखाए गए दृढ़ संकल्प के प्रदर्शन के साथ, चीन को खुद सामने आते नहीं पा रहे, बल्कि वह खेल कर रहा है ङ्क खुद पीछे रहकर किसी और से जोर-ज़बरदस्ती करवाने वाले की भूमिका में। इस नाटक का पर्दाफाश करने में ऑपरेशन सिंदूर पहला उदाहरण रहा। यह चीन और उसका मुखौटा बने पाकिस्तान के लिए एक संदेश भी था, जहां भारत तनाव को विस्तार देने के उनके खेल में नहीं फंसने वाला है वहीं पीछे भी नहीं हटेगा। हाथी सब याद रखता है। और याददाश्त की बदौलत, वह उकसावे से नहीं, संतुलन के के साथ नपी-तुली कार्रवाई करता है। भारत का उदय, अपने हित कायम रखने की एवज में सहयोगियों की बलि देने वाली पामर्स्टन नीति पर चलकर नहीं हुआ है।

सांसद निधि से बनने वाले अंबेडकर भवन निर्माण में मिलीं गंभीर अनियमितताएं

दतिया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षय कुमार तेम्रवाल आदेश जारी कर ग्राम पंचायत ललउआ सचिव रामजीवन दांगी द्वारा अम्बेडकर भवन निर्माण कार्य को तकनीकी मापदंड अनुसार नहीं कराए जाने पर निलंबित किया गया। उक्त कार्य की आवेदक/शिकायतकर्ता मनोज, भगवान सिंह एवं समस्त ग्रामवासी ललउआ जनपद पंचायत दतिया का शिकायत आवेदन अनुसार ग्राम पंचायत ललउआ में सांसद निधि से स्वीकृत अंबेडकर भवन निर्माण कार्य पंचायत के सरपंच एवं सचिव व इंजीनियर की देखरेख में चल रहा है। उक्त भवन निर्माण कार्य में विगत 9 जुलाई 2025 को लेंटल बीम का कार्य चल रहा था, मौके पर ललउआ ग्रामीण लोगों ने देखा कि उसमें 12 एमएम स्टील की जगह 10 एमएम का स्टील लगाया जा रहा है। साथ ही जो रिंग वायर 6 एमएम का लगाया जा रहा है। जिसकी स्पेसिंग 3 फुट और 4 फुट है। साथ ही कंक्रीट मशाला कम सीमेंट का लगवाया जा रहा है। साथ ही लेंटल बीम में स्टील का तार एवं रिंग तकनीकी मापदंड अनुसार नहीं डाला जा रहा है।

तकनीकी मापदंड पर खरी नही उतरी निर्माण सामग्री: ग्राम पंचायत ललउआ सचिव रामजीवन दांगी द्वारा अम्बेडकर भवन निर्माण कार्य में तकनीकी मापदंड अनुसार सामग्री का उपयोग नहीं करने से सचिवीय कार्य के प्रति अनुशासनहीनता व उदासीनता एवं वित्तीय अनियमितता परिलक्षित होने से प्रथम दृष्टया दोषी है। रामजीवन दांगी सचिव ग्राम पंचायत उनाव के द्वारा अतिरिक्त सचिवीय ग्राम पंचायत ललउआ जनपद पंचायत दतिया में सांसद निधि से स्वीकृत अम्बेडकर भवन निर्माण कार्य के संबध में शिकायत के आधार पर वित्तीय अनियमितता, अनुशासनहीनता एवं उदसीनता परिलक्षित होती है।

बिल भुगतान में 17 प्रतिशत कमीशन की मांग पर हुई कार्रवाई: ग्राम पंचायत चरबरा सचिव सुधीर यादव जनपद पंचायत दतिया द्वारा पंचायत के निर्मित कार्यो का मूल्यांकन उपरांत बिल राशि भुगतान के संबध में 17 प्रतिशत कमीशन की मांग की जा रही है। प्रथम दृष्टया के आधार पर ग्राम पंचायत चरबरा सचिव सुधीर यादव एवं सरपंच कप्तान सिंह दांगी की प्रतीत हो रही है जिसमें सचिव द्वारा बिलों को बनाए जाने तथा भुगतान किए जाने की बात की जा रही है। उक्त प्रतिवेदन पर यह स्पष्ट है कि सुधीर यादव सचिव ग्राम पंचायत चरबरा के द्वारा बिल बनाने तथा भुगतान करने के लिए सचिव की ओर से कमीशन की मांग की जा रही है। श्री यादव सचिव का कार्य अनुशासनहीनता एवं अशोभनीय होने से प्रथम दृष्टया दोषी हैं। सचिव ग्राम पंचायत ललउआ रामजीवन दांगी एवं सचिव ग्राम पंचायत चरबरा सुधीर यादव को मध्य प्रदेश पंचायत सेवा (पंचायत सचिव और सेवा की शर्तें) नियम 2011 के नियम-7 एवं मध्य प्रदेश पंचायत सेवा (अनुशासन तथा अपील) नियम 1999 के तहत उक्त कदाचार के कारण तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है। जिला पंचायत सीईओ अक्षय कुमार तेम्रवाल द्वारा आदेश जारी कर सरपंच ग्राम पंचायत ललउआ श्रीमती प्रिंयका शर्मा को कारण बताओ नोटिस दिया गया।

जाहिर सूचना

I, MEGHA VISHNOI D/o ASHOK VISHNOI, Resident of 85, Village-Khamlay, Tehsil-Kharikiya, District-Harda, Madhya Pradesh- 461331, have changed my name to VEDANSHI VISHNOI.

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

रा.प्र.क्रं.0919/अ-6/25-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 18/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 407/1/1/1 क्षेत्रफल 0.5710 हेक्टेयर, उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) लक्ष्मी उदैनिया/गजेन्द्र कुमार उदैनिया निवासी शहर।

आज दिनांक 11/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

रा.प्र.क्रं.0918/अ-6/25-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 18/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 407/1/1/1 क्षेत्रफल 0.5710 हेक्टेयर, उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) रक्षा पाण्डेय/कुशाग्र पाण्डेय निवासी शहर।

आज दिनांक 11/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

रा.प्र.क्रं.0917/अ-6/25-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 18/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 407/1/1/1 क्षेत्रफल 0.5710 वर्गफिट, उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) रक्षा पाण्डेय/कुशाग्र पाण्डेय निवासी शहर।

आज दिनांक 11/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

प्रारूप दस
(नियम 7 देखिये)

न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन कोहेफिजा जिला भोपाल)

रा.प्र.क्रं.0890/अ-6/25-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय में समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 18/07/2025 को 03.00 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संतहिरदाराम नगर बैरागढ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिये गये हो, या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची

ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 407/1/2/1 क्षेत्रफल 0.9470 हेक्टेयर, उस व्यक्ति विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) विक्रम देव/भारत सिंह निवासी शहर।

आज दिनांक 11/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ) वृत्त भोपाल

कार्यालय नगर पालिक निगम, रतलाम (म0प्र0) 457001

क्रंमाक 249/स्टोर/2025 रतलाम, दिनांक 07/07/2025

प्रथम निविदा आमंत्रण

नगर पालिक निगम, रतलाम द्वारा mptenders-gov-in के माध्यम से ऑनलाइन निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्रं	ई निविदा क्रंमाक	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत (रूपये में)	कार्य हेतु धरोहर राशि (रूपये में)	निविदा मूल्य प्रपत्र	कार्य की समयावधि
1	435831	नगर पालिक निगम, रतलाम में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं, स्वच्छ भारत मिशन जनसम्पर्क विभाग एवं समय-समय पर शासन से प्राप्त होने वाले निर्देशों के क्रम में नगर के विभिन्न स्थानो पर विभिन्न साईजों में फ्लेक्स बैनर एवं होर्डिंग बनाने मय डिजाईनिंग, स्टेंडी एवं स्थल पर उनकी स्थापना तथा संलग्न सूची अनुसार सामग्री प्रदाय करने संबंधी कार्य (कार्य की दरें फ्रेम सहित एवं फ्रेम रहित पृथक-पृथक रूप से रूपये प्रति वर्गफीट एवं अन्य कार्य जैसे टी-शर्ट प्रदाय एवं प्रिंटिंग, केप प्रदाय एवं प्रिंटिंग, आईडी कार्ड एवं रंगीन कलर स्टिकर आदि की दर प्रति नग के आधार पर प्रस्तुत करनी होगी।)	40,00,000/-	50,000/-	5000/-	कार्यादेश दिनांक से 1 वर्ष

उपायुक्त एवं स्टोर प्रभारी
नगर पालिक निगम, रतलाम

कार्यालय नगर पालिक निगम कटनी (म.प्र.)

क्रमांक 100/रा.वि.ना.शा./2025 कटनी, दिनांक : 8.7.2025

नामांतरण सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि म.प्र. नगर पालिक निगम अधिननियम 1956 की धारा 167 के तहत निम्नलिखित भवनों पर नाम परिवर्तन हेतु आवेदन पत्र प्राप्त हुये है भवन के नाम परिवर्तन पर किसी को कोई आपत्ति हो तो इस सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर अधोहताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें। आपत्ति प्राप्त न होने की दशा में मात्र कर वसूली हेतु

क्र.	नाम हस्तांतरक	नाम हस्तांतरिती	नामांतरण का आधार	भवन क्रमांक एवं वार्ड का नाम
1	श्री ज्ञानप्रकाश/श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव	श्री विनीत कुमार/स्व.ज्ञानप्रकाश श्रीवास्तव	मृत्युप्रमाणपत्र शपथपत्र	492 वेंकट वार्ड
2	श्री प्रकाश चावला/स्व.बिहारीलाल चावला	श्री विशाल पुरूस्वानी/श्री शोभी पुरूस्वानी	रजिस्ट्री	1318 गुरूनानक वार्ड
3	श्री लक्ष्मीचंद/श्री भगवानदास एवं श्री अनिल कुमार, श्री विकास, श्री राजेश/श्री लक्ष्मीचंद बाझल	श्री अनिल, श्री राजेश बाझल दोनों के पिता स्व.लक्ष्मीचंद जैन (बाझल) एव श्रीमति अनीता/स्व.विकास बाझल	मृत्युप्रमाणपत्र शपथपत्र	1266 गुरूनानक वार्ड
4	श्री संतोष कुमार/श्री मुन्नालाल श्रीवास्ताव	श्रीमति हेमलता/स्व.संतोष कुमार श्रीवास्तव	रजिस्ट्री मृत्युप्रमाणपत्र शपथपत्र	621 बाबू वंशरूप वार्ड
5	मेसर्स द्वारका इन्फ्रावेन्चर्स प्रा.लि. द्वारा डायरेक्ट श्री हेमनदास मोटवानी/श्री दयालदास मोटवानी	श्रीमति खुशबू बगडिया/श्री शुभम बगडिया	रजिस्ट्री	143 का अंश भाग बाबू वंशस्वरूप वार्ड
6	श्री हेमनदास/श्री सच्चानंद	श्रीमति लीलादेवी/स्व.हेमनदास भोजवानी	मृत्युप्रमाणपत्र शपथपत्र	589 हेमू कालाणी वार्ड
7	श्री सतेन्द्र राय/श्री ज्ञानी राय	श्री रविन्द्र कुमार/श्री गोपालकृष्ण जगवानी	रजिस्ट्री	708 हेमू कालाणी वार्ड
8	श्री लक्ष्मीदास/श्री रामजी	श्रीमति अनिता/श्री आनंद कुमार मिश्रा	रजिस्ट्री	630 हेमू कालाणी वार्ड
9	श्रीमति लजवंती डोडनानी/श्री मोतीलाल एवं श्री नानकराम/श्री मोतीलाल	श्री महेन्द्र कुमार/श्री रामूराम नाई	रजिस्ट्री	1129 हेमू कालाणी वार्ड
10	श्रीमति पुष्पा/श्री नानकराम गोधवानी एवं श्रीमति मीना परवानी/श्री रामचंद गोधवानी एवं श्री लक्ष्मणदास गोधवानी सभी के पिता श्री गोपालदास गोधवान	श्री रामचंद/स्व. गोपालदास गोधवानी	रजि. हकत्यागपत्र	281 हेमू कालाणी वार्ड

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, कटनी

कार्यालय नगरपालिका परिषद शहडोल, जिला शहडोल (म.प्र.)
Office of the Municipal Council Shahdol, Distt. Shah dol (M.P.)

D.D. Complex, Near Tagore Parl Shahdol, Distt Shahdol
484001 Email:cmoshahdol@mpurban.gov.in
Ph. No. 07652-245175 (O) 241015 (F)

क्रमांक/न.पा.श./3063 शहडोल, दिनांक : 8.7.25

निविदा आमंत्रण सूचना

एतद् द्वारा केन्द्रीय पंजीयन पद्धति से पंजीकृत ठेकेदारों से नीचे दिये गये विवरण अनुसार ऑनलाईन पद्धति से प्रतिशत दर पर निविदा आमंत्रित की जाती है।

एन.आई.टी.नम्बर	ई-टेण्डर नम्बर	कार्य का नाम व विवरण	अनुमानित लागत (लाख में)	अमानत राशि	ऑनलाईन निविदा प्रप्ति की कीमत	ठेकेदार की श्रेणी	कार्य की समयसीमा	पोर्टल पर निविदा देखने एवं सबमिट करने का दिनांक
2976	2025_UAD_435690_1	CONSTRUCTION OF WEIGH BRIDGE AT KOTMA PROCESSING PLANT SHAHDOL AS PER NIT AND ESTIMATE	7.76	7800	2000	Registered Contractors and firms AS PER NIT	30 days	09.07.2025 से 23.07.2025 समय 5:30 PM तक
2974	2025_UAD_435676_1	INVITING PERCENTAGE RATE FOR CONSTRUCTION OF COMPOST SHED FACILITY IN KOTMA PROCESSING PLANT UNDER ULB SHAHDOL AS PER NIT AND ESTIMATE	191.64	96000	12500	Registered Contractors and firms AS PER NIT	365 days	09.07.2025 से 23.07.2025 समय 5:30 PM तक
2975	2025_UAD_435681_1	CONSTRUCTION OF COLLECTION TANK AT KOTMA PROCESSING PLANT SHAHDOL AS PER NIT AND ESTIMATE	2.83	2900	2000	Registered Contractors and firms AS PER NIT	30 days	09.07.2025 से 23.07.2025 समय 5:30 PM तक

1. इच्छुक ठेकेदार ऑनलाईन निविदा https:/mptenders.gov.in/ पर देखी जा सकती है।
2. किसी भी प्रकार का एन.आई.टी. से संबंधित शुद्धीपत्र केवल वेबसाईट में प्रसारित किया जावेगा समाचार पत्रों में नहीं किया जावेगा। निविदा संबंधी समस्त विवरण एवं शर्तें ऑनलाईन एवं कार्यालय के लोक निर्माण शाखा में देखी जा सकती है।

(अक्षत बुन्देला)
मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगरपालिका परिषद शहडोल जिला शहडोल म.प्र.

कार्यालय नगर परिषद चाचौडा बीनागंज जिला - गुना (म.प्र.)

क्र./510/ई.नि./ चाचीडा बीनांगंज दिनांक 11.07.2025

द्वितीय आनलाईन निविदा सूचना

नगर परिषद चाचौडा बीनांगंज द्वारा वार्ड विभिन्न वार्डों में विभागीय निर्माण कार्य हेतु निर्माण कार्य मे लगने वाली सामग्री की सप्लाई एवं मशनीरी किराये पर प्रदाय किये जाने हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिये आनलाईन निविदा सामग्री दर item rate पर आमंत्रित की जाती है। पंजीकृत सप्लायर / ठेकेदार अपनी अपनी दरें https://mptenders.gov.in/ पर ऑनलाईन प्रस्तुत कर सकतें है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक	विवरण	अनुमानित लागत	अमानत राशि	निविदा शुल्क
1	2025_UAD_436724_1	विभागीय निर्माण कार्य में लगने वाली निर्माण सामग्री की सप्लाई एवं मशीनरी किराये पर दिये जाने हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26	20.00 लाख	15000/-	5000/-

शर्तें :-
1- इच्छुक निविदाकार वेबसाईट **https://mptenders.gov.in/** पर जाकर निविदा की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते है।
2- निविदाकार को ठेकेदारी का पंजीयन, पेन कार्ड तथा वस्तु एवं सेवाकर (G.S.T) का पंजीयन उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा इनके बिना निविदा स्वीकार नहीं की जावेगी।
3- अनुबंध अवधि पूर्ण न होने तक अनुबंधकर्ता की सुरक्षानिधि जमा रहेगी ताकि सामग्री सप्लाई न कर पाने या अन्य अनियिमितताओं की स्थिति मे उसको राजसात किया जा सके।
4- निविदा सिर्फ ऑनलाईन स्वीकार की जावेगी।
5- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार का संशोधन या शुद्विपत्र जारी होने की स्थिति मे सिर्फ ऑनलाईन वेबसाईट **https://mptenders.gov.in/** पर प्रकाशित किये जावेगें।
6 - वित्तीय वर्ष 2025-26 मे सामग्री की दरें 1 वर्ष के लिये अपरिवर्तनीय रहेगी।
7- समस्त निर्माण सामग्री उच्च गुणवत्ता की एवं निर्माण स्थल पर सप्लाई करना होगी।
टेण्डर क्रय करने एवं टेण्डर डालने की प्रारंभ तिथि 11.7.2025 दोप 3:00
टेण्डर क्रय करने एवं टेण्डर डालने की अंतिम तिथि 26.07.2025 सायं 05:30
टेण्डर खोलने की तिथि 28.07.2025 दोप0 03:00 बजे

मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगर परिषद चांचौड़ा बीनागंज जिला गुना म.प्र.

कार्यालय नगर पालिक निगम सागर

क्र./नामा.शा./न.नि./2025-26/20 सागर, दिनांक : 10.7.2025

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, नगर पालिक निगम सागर सीमान्तर्गत नीचे दिए गए भवन/प्लाटों पर नाम दर्ज करने हेतु आवेदन प्राप्त हुए हैं। अतः इस संबंध में जिन व्यक्तियों को कोई आपत्ति हो तो वे अपनी लिखित आपत्ति सूचना प्रकाशन के 30 दिवस के अन्दर आयुक्त, नगर पालिक निगम सागर के नाम से प्रस्तुत कर सकते हैं।

क्र	प्र.क्र.	वार्ड का नाम भवन/प्लाट	किस आधार पर	नाम बेचवार/वसीयतनामा/दानदाता/वंशानुक्रम	जिस व्यक्ति का नाम दर्ज होना है
1	541/25-26	शुक्रवारी	रजि.बैनामा, शपथपत्र	शैलेन्द्र पिता सुरेश दीक्षित	नीलम पति कपिल कुमार रजक
2	542/25-26	दयानन्द	मृत्यु-प्रमाण पत्र, शपथपत्र	सियारानी पति स्व. रामचरण कुर्मी	महेन्द्र कुमार,शंकरलाल,राजू पिता स्व. हल्कूराम रैकवार
3	543/25-26	शास्त्री	रजि.बैनामा, शपथपत्र	प्रतापसिंग पिता मुरलीधर एवं घनश्याम पिता रामचरण कुर्मी	श्वेता पति सुदीप जैन
4	544/25-26	शास्त्री	रजि.बैनामा, शपथपत्र	नीलेश पिता सन्तोष कुमार जैन	संगीता पति सीताराम पटैल
5	545/25-26	शास्त्री	रजि.बैनामा, शपथपत्र	किशोर पिता बादलदास एवं मनोज कुमार पिता नन्दकिशोर यादव	नीतू पुत्री बालकिशन वास्त्री
6	546/25-26	विठ्ठल नगर	रजि.बैनामा, शपथपत्र	फहमीदा बेगम पति अब्दुल वशीर सिद्दकी	नाजरीन नाज पति शाहरूख खान
7	547/25-26	विठ्ठल नगर	रजि.बैनामा, शपथपत्र	मुवीन वल्द जहूर खान	फरीदा बेम पति अलीम खान
8	548/25-26	विठ्ठल नगर	रजि.बैनामा, शपथपत्र	रवि पिता बाबूलाल विश्वकर्मा	सुरेन्द्र पिता सुन्दरलाल अहिरवार
9	549/25-26	भगवानगंज	मृत्यु-प्रमाण पत्र, शपथपत्र	शान्तिबाई पति स्व. किशन प्रसाद दीक्षित	नीलेश एवं कमलेश पिता स्व. किशन प्रसाद दीक्षित
10	550/25-26	तिलकगंज	रजि.बैनामा, शपथपत्र	कमल पिता गोविन्द सिंह हजारी	सुधा पति प्रेमनारायण ठाकुर

कृते-आयुक्त
नगर पालिक निगम
सागर

शिवपुरी में ब्लैकमेलिंग से परेशान सरपंच संघ ने कलेक्टर को दिया ज्ञापन

तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्यवाही की मांग

समय जगत, शिवपुरी। मध्य प्रदेश की ग्राम पंचायतों और सरकारी विभागों में इन दिनों आरटीआई लगाकर ब्लैकमेलिंग और अवैध धन उगाही के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला शिवपुरी जिले की करैरा विधानसभा क्षेत्र की नरवर जनपद की ग्राम पंचायत सिमिरिया से सामने आया है। जहां ब्लैकमेलिंग से परेशान ग्राम पंचायत के सरपंच सचिव ने जिले के सरपंच संघ के साथ जिला कलेक्टर के नाम संयुक्त कलेक्टर जेपी गुप्ता को ज्ञापन देकर एक तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्यवाही किए जाने की मांग की है। संयुक्त कलेक्टर ने इस मामले में जांच के बाद कार्यवाही की बात कही है। सरपंच संघ जिला इकाई शिवपुरी के जिला अध्यक्ष मोहर सिंह धाकड़ ने आरोप लगाते हुए बताया कि ग्राम पंचायत सिमिरिया में नरवर के एक

तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता कमर खान द्वारा आरटीआई लगाकर सरपंच सचिव को ब्लैकमेल किया जा रहा था। विगत दिवस कमर खान द्वारा जो जानकारी चाही गयी थी वो समस्त जानकारी सत्यापित प्रतिलिपि में ग्राम पंचायत द्वारा कमर खान को दे दी गयी। जिस पर कमर खान के द्वारा प्राप्ति का आवेदन पत्र प्रस्तुत कर दिया जो कि ग्राम पंचायत ने जनपद पंचायत में उसकी छायाप्रति व्हाट्सप्प के माध्यम से ब्रजमोहन कोली खंड अधिकारी को भेज दिया। इसके बाद कमर खान के द्वारा सचिव से 50000 रुपये मांगे गए, जिस पर सचिव व महिला सरपंच ने पूंछा पैसे किस बात के इस बात पर कमर खान ने सचिव और हमारी महिला सरपंच के साथ अभद्रता की गई। सरपंच संघ ने आरोप लगाते हुए बताया कि कमर खान के द्वारा विगत कई वर्षों से झूठी सूचना के अधिकार के तहत जानकारी के अधिकार का दुरुपयोग कर रहा है। आज दिनांक तक कमर खान के द्वारा सेकड़ों आरटीआई दर्ज कि गयी है जो कि पूर्ण रूप से झूठी एवं मिथ्या है। जिसका रिकॉर्ड सूचना अधिकार आयोग के पास दर्ज होगा। सरपंच संघ ने तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

नर्मदा घाट से सैकड़ों कांवड़ियों की महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के लिए निकली कावड़ यात्रा

समय जगत, बड़वाह। नर्मदा घाट से पवित्र श्रावण माह के प्रारंभ होते ही शुक्रवार को सैकड़ों कांवड़ियों ने कांवड़ों में मां नर्मदा का जलभर कर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन के लिए रवाना हुए है।

भगवान शिव की आराधना भक्ति तपस्या का पवित्र श्रावण माह 11 जुलाई शुक्रवार से प्रारंभ होते ही सम्पूर्ण क्षेत्र शिवभक्ति में रंगमय नजर आने लगा है। जिसको लेकर मध्यप्रदेश के बड़वाह नावघाट खेड़ी स्थित नर्मदा घाट पर शुक्रवार को उत्तर प्रदेश बरेली के जय श्री महाकाल बेड़ा संघ के बेनर तले सैकड़ों कांवड़ियों ने मां नर्मदा का कांवड़ों मे जल भरकर पूजन आरती की। पश्चात मां नर्मदा के

पवित्र जल को कावड़ में लेकर कावड़िए इंदौर इच्छापुर हायवे से महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन की ओर कावड़ यात्रा पर रवाना हुए। ओंकारेश्वर व नर्मदा घाट बड़वाह से उज्जैन कावड़ यात्रा अब एक भव्य परंपरा बन चुकी है। जिसमें हर साल हजारों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।

सार-समाचार

जमीन विवाद को लेकर किया प्राणघातक हमला

उज्जैन। जिले के माकड़ौन थाना क्षेत्र में विगत दिनों जमीन विवाद को लेकर ग्राम बाजनातलाई में पीड़ित अनिताबाई व उनके पति जितेंद सिंह व सास राजुबाई के साथ आरोपीगण गोपी, प्रभु, रंजीत, चेनसिंह, सौदान, अरुण के द्वारा जमीन विवाद को लेकर प्राणघातक हमला कर दिया, जमीन हड़पना चाहते है हमले तीनो पीड़ित को गम्भीर चोट है जिसमे अनिता का हाथ टूट गया, पति जितेंद को सिर में गम्भीर चोंट आयी व सास राजुबाई कोमा में है। आरोपियो को थाने से जमानत मिलने के बाद लगातार गांव में खुलेआम घूम रहे, जिससे पीड़ित परिवार को जान को खतरा है। जिसको लेकर पीड़ित परिवार ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौपकर धारा बढ़ाकर आरोपियो पर कड़ी कार्यवाही की मांग की है।

माधव साख सहकारी संस्था मर्यादित बिस्टान ने छात्रों को वितरित किये बस्ते

बिस्टान निप्र। नगर की संस्था ने 1 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शासकीय प्राथमिक विद्यालय गोपालपुरा के छात्र छात्रों को नि:शुल्क बस्ते वितरित कर उन्हें स्कूल रोजाना आने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया। जिसमें नगर परिषद बिस्टान के अध्यक्ष डेमसिंग नॉर्वे, पार्षद प्रहलाद सिंग वास्कले, पार्षद प्रतिनिधी प्रेमलाल मोरे सहित समाजसेवी राजू कोल्या, आकाश ठाकुर, गोरेलाल वास्कले, सहित संस्था के अध्यक्ष हीरालाल यादव उपाध्यक्ष राहुल सोनी, नरेंद्र गोले, प्रबंधक दिनेश सोनी व विद्यालय की शिक्षिका मीना सोनी सहित स्टाफ मौजूद था। इस अवसर पर राहुल सोनी ने बच्चों को उद्बोधित करते हुए कहा कि समय का सम्मान करना सीखें समय से विद्यालय आना, होमवर्क समय से करके लाना साथ ही अपने सहपाठी को स्कूल साथ लाने का प्रयास करे। डेमसिंग नार्वे ने भी बच्चों को को सम्बोधित किया और कहा कि आप देश के भविष्य हो आप पढ़ लिखकर आगे बढ़ो और अपने नगर और देश का मान बढ़ाओ। आभार नरेंद्र गोले ने माना।

छह युवा साइकिल से वैष्णो देवी की यात्रा पर हुए रवाना, नागरिकों ने किया स्वागत

सुठालिया। नगर के परलापुरा निवासी छह युवक गुरुवार को गुरु पूर्णिमा के मौके पर मोहन सिंह कुशवाहा के नेतृत्व में साइकिल से जम्मू कटरा स्थित वैष्णो देवी माता के दर्शन हेतु रवाना हुए। इनमे पदम कुशवाह दिनेश कुशवाह धमेंद्र कुशवाह दिलीप मेहर रमेश मेहर शामिल हे जिनको प्राता 9:00 बजे परलापुरा से पुष्पहार पहनाकर स्वागत कर ढोल ढमाके के साथ विदाई दी गई वहीं जगह-जगह उनका स्वागत किया गया। साइकिल यात्रीयो का जत्था नगर के मुख्य मार्ग श्री राम मंदिर चौक सदर बाजार गांधी चौक मेंन मार्केट बस स्टैंड होते हुए रवाना हुआ जिनका लोगो ने पुष्प हार से स्वागत किया। इस दौरान पार्षद आकाश अग्रवाल पूर्व नप उपाध्यक्ष महेश पालीवाल पार्षद मोर सिंह कुशवाहा देवी सिंह कुशवाह कमलेश आदि नागरिक एवं महिला पुरुष ने मौजूद रहकर सभी छह यात्रियों को विदाई दी। वही ब्यावरा रोड स्थित एक निजी होटल में नप उपाध्यक्ष प्रदीप सिंह परमार ने सभी का पुष्पहार से मिठाई खिलाकर स्वागत किया। उक्त छह सायकल यात्री करीब एक माह का सफर कर जम्मू कटरा स्थित माता वैष्णो देवी के दर्शन कर लौटेंगे।

सावन की हुई शुरुआत, नगर में होने लगे आयोजन अखण्ड रामायण पारायण का पाठ चलेगा

छापीहेड़ा। नगर के बस स्टैंड परिसर पर स्थित चोपड़ा महादेव मंदिर पर हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अखंड रामायण पारायण पाठ का आयोजन किया जा रहा है आज शुक्रवार को बस स्टैंड शिव मंदिर से श्री राम मंदिर बाजार चौक अखण्ड रामायण पारायण का ढोल धमाके के साथ। नगर में चल समारोह निकाला। नगर के भोले मित्र मंडल के द्वारा आयोजित की जाती है साथ ही सावन के आखिरी सोमवार को भोले बाबा का नगर भ्रमण एवं विषेश साज सज्जा की जाएगी साथ ही भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा।

गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरा. गुरुर साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

समय जगत, खिरकिया। गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर सियॉन - रे इंटरनेशनल स्कूल में बीते गुरुवार दिवस पर गुरु पूर्णिमा के त्यौहार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. गुरु की महिमाओं का वर्णन करते हुए छात्र-छात्राओं ने एकलव्य द्रोणाचार्य की किरदार को निभाते हुए एक सुंदर नाटक प्रस्तुत किया जिसमें गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा बनाकर एकलव्य विशेष और विशिष्ट धनुर्धर बना नाटक के माध्यम से सभी छात्र-छात्राओं को गुरु की महिमा एवं गुरु का महत्व बताया. गायन के माध्यम से भी गुरु की महिमा का बखान किया गया. शाला के संचालक जयसिंह राजपूत ने छात्र-छात्राओं को गुरु का महत्व और गुरु के सम्मान करने की प्रेरणा दी वही शाला के प्राचार्य अमित भार्गव द्वारा छात्र-छात्राओं को गुरु एवं गुरु समान माता-पिता के आदर और सम्मान करने के लिये प्रेरित किया गया और बताया गया की गुरु एक ऐसा दीपक हे जो स्वयं जलकर दूसरों को अपने ज्ञान के प्रकाश से रोशन करता है।

स्टेट हाईवे-44 पर एमपीआरडीसी विभाग के अधीन

मजबूती की गारंटी बारिश में धुली, 13 करोड़ की फोरलेन सड़क बनी जानलेवा

सिलवानी। स्टेट हाईवे-44 पर एमपीआरडीसी विभाग के अधीन सिलवानी नगर में आमापानी कॉलोनी से बजरंग चौराहा तक बनाई गई करीब 2 किलोमीटर लंबी फोरलेन सड़क अब गड्ढों में तब्दील हो गई है। लगभग 14 करोड़ की लागत से तीन वर्ष पूर्व बनी यह सड़क अब वाहन चालकों के लिए खतरे का सबब बन चुकी है। बारिश के चलते डामर की ऊपरी परत उखड़ गई है और जगह-जगह गिट्टी-बजरी फैलने से दोपहिया वाहन फिसल कर दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं।

निर्माण एजेंसी पर गंभीर आरोप: इस निर्माण कार्य को एमपीआरडीसी (मध्य प्रदेश सड़क विकास निगम) विभाग द्वारा केपकॉन प्रोजेक्ट कंपनी से कराया गया था। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि निर्माण कार्य में घटिया सामग्री का उपयोग किया गया तथा विभागीय अधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण नहीं किया गया। एमपीआरडीसी की एजीएम सोनम सिंह पर भी सड़क की स्थिति की अनदेखी

और मरम्मत कार्य में लापरवाही बरतने के आरोप लगाए गए हैं।

सिर्फ रस्म अदायगी तक सीमित रखरखाव: स्थानीय नागरिकों की शिकायत और पत्रिका समाचार पत्र में सड़क की जर्जर हालत को उजागर करने के बाद विभाग ने गिट्टी-बजरी डालकर मात्र औपचारिकता पूरी की, लेकिन इससे समस्या और बढ़ गई है। गड्ढों में भरी गई गिट्टी बारिश में बह गई और अब वह सड़क पर फैलकर वाहनों के फिसलने का कारण बन रही है।

राहगीरों को डर, हादसों का खतरा: सड़क की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि राहगीर अब इन मार्गों से गुजरने से डरने लगे हैं। लगातार हो रहे हादसों के कारण लोग अपने बच्चों और बुजुर्गों को इस मार्ग से भेजने से कतराते हैं। दोपहिया वाहन चालक खास तौर पर गिट्टी पर फिसलकर चोटिल हो रहे हैं। स्थानीय निवासी प्रियांशु राजपूत ने बताया, तीन साल पहले बनी सड़क आज बदहाल है। विभाग और ठेकेदार की मिलीभगत से जनता की गाढ़ी कमाई यूं ही बह गई।

जनता ने की कार्रवाई की मांग: स्थानीय लोगों ने मांग की है कि इस पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच कराकर दोषियों पर कठोर कार्रवाई की जाए। साथ ही, सड़क का पुनः उच्च गुणवत्ता से निर्माण या मरम्मत कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए, ताकि जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

मोबाइल नहीं देने पर बड़े भाई ने छोटे भाई को उतारा मौत के घाट, आरोपी गिरफ्तार

समय जगत, खिरकिया। मामला हरदा जिले के थाना छिपाबड अंतर्गत आने ग्राम मांदला का है। जानकारी के अनुसार मोबाइल नहीं देने की बातों को लेकर बड़े भाई ने छोटे भाई को लकड़ी से सिर में मारकर मौत के घाट उतार दिया। जानकारी के अनुसार मृतक राजा पिता मन्नू लाल काजले उम्र 25 साल निवासी ग्राम मांदला जिला हरदा का बताया गया है। प्रभारी एसआई दिनेश सिंह रावत ने बताया कि परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार बताया गया पिछले 10 दिन पहले बड़े भाई ने छोटे भाई मृतक राजा को एक मोबाइल दिया था जिसे मांगने पर राजा उसे मोबाइल नहीं लौटा रहा था जिससे बड़े भाई ने गुस्से में आकर लकड़ी से सिर में वार किया जिससे राजा की मौके पर मौत हो गई एसआई रावत ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

क्षेत्र में आये दिन उजागर हो रहे हैं घोटाले

लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी- समय जगत, ब्योहारी। सरकारी राशि के वसूली मामले मे बडे अधिकारियो की तरह अब छोटे कर्मचारी भी तरह तरह के हथकंण्डे अपनाकर कलेक्टर तक के आदेश की खुलेआम धज्जिया उडा रहे है ? ब्यौहारी जनपद के ग्राम पंचायत हिरवार मे बडी मात्रा मे हुऐ सरकारी राशि के ख्यानत मामले मे जिले के कलेक्टर के आदेश की नाफरमानी सुर्खियो मे है लगभग डेढ साल से ऐ मामला ब्यौहारी के यसडीयम कार्यालय से तहसीलदार कार्यालय तक भटक रहा है आखिरकार कौन सी बाधाऐ है जो ख्यानत राशि की वसूली मे अडंगा डाल रही है आपको बता दे कि कलेक्टर शहडोल ने यसडीयम ब्यौहारी को निर्देशित किया कि ब्यौहारी जनपद क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत हिरवार के पूर्व सरपंच रणबहादुर सिंह तथा सचिव अमरेन्द्र सिह से लाखो रुपये की वसूली कर सरकारी खजाने मे जमा कराऐ, इसके परिपालन मे महीनो बाद फाइल को यसडीयम कार्यालय से तहसीलदार कार्यालय भेजा गया, कुछ महीनो तक कार्यवाही नही होने पर मामला मीडिया मे आने से तहसीलदार द्वारा नोटिस भेजकर तलब किया गया लेकिन आरोपी नही आऐ।

फिर और भी नोटिसे गई लेकिन आरोपी नही आऐ : इसके बाद पटवारी को निर्देशित किया गया कि आरोपी रणबहादुर की सम्पत्ति विवरण दे लेकिन अब हल्का पटवारी रीतेश गोस्वामी बडी बाधा बने हुऐ है खबरे है कि इस संवेदनशील मामले मे पटवारी नियत तिथि को पहुचे ही नही मामले मे फिर पेशी बढा दी गई और सरकारी राशि की वसूली का मामला एक बार फिर खटाई मे पडता दिख रहा है !

इधर अभी भी हिरवार पंचायत में भ्रष्टाचार जारी है : ग्रामीणों का आरोप है कि सोलर पैनल के नाम पर पंचायत के सचिव सुखदेव मिश्रा तथा पूर्व सरपंच ने ठेकेदार से लाखो रुपयो कमीशन लिऐ है पर आच तक नही आई ! सवाल खडे हो रहे है कि आखिरकार जिले मे हो क्या रहा हैं आऐ दिन सरकारी विभागो से घोटाले के जिन्न निकल रहे है शिक्षा विभाग स्वास्थ्य विभाग पंचायत विभाग यहा तक की खुद जिले मे घोटाले हो रहे है अब तो कलेक्टर केदार सिंह के क्रियाकलापों सहित प्रशासनिक कुशलता पर सवाल खडे होने लगे है।

आपात स्थिति में गर्भवती को अस्पताल पहुंचाने पर निजी वाहन चालक को मिलेगा खर्च का रिम्बर्समेंट : कलेक्टर प्रियंक मिश्रा

धार। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने आज जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में महत्वपूर्ण निर्देश देते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति आपातकालीन स्थिति में अपने निजी वाहन से किसी गर्भवती महिला को अस्पताल पहुंचाता है, तो उसके द्वारा किए गए खर्च की रिम्बर्समेंट की व्यवस्था रेडक्रॉस के माध्यम से की जाए। यह व्यवस्था जनसहयोग को प्रोत्साहित करने और समय पर प्रसव सेवाएं सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के मानवीय कार्यों की प्रशंसा की जाना चाहिए ताकि स्वास्थ्य सेवाओं की अंतिम छोर तक पहुंच मजबूत हो सके। यह निर्देश आज कलेक्टर कार्यालय के सभागार में संपन्न हुई जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में दिए गए। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने की। बैठक में स्वास्थ्य विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला एवं खंड स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे। बैठक में आईएमआर और एमएमआर की विशेष समीक्षा की गई। कलेक्टर ने स्पष्ट कहा कि इन दोनों सूचकों में सुधार लाने के लिए लक्ष्य निर्धारित कर अभियान चलाया जाए। उन्होंने कहा कि ये दोनों आंकड़े सभी स्वास्थ्य योजनाओं की सफलता से जुड़े हुए हैं और इनका उच्च होना इस बात का संकेत है कि गाइडलाइन का पालन नहीं हो रहा है, जो मिसमैनेजमेंट का प्रतीक है।

कलेक्टर मिश्रा ने स्वास्थ्य संस्थानों में टीकाकरण की धीमी प्रगति पर भी नाराजगी जताई। उन्होंने अधिकारियों से पूछा कि अब तक सम्पूर्ण टीकाकरण क्यों नहीं हो पाया? साथ ही इस दिशा में पुख्ता कार्ययोजना और जरूरी मॉनिटरिंग की अपेक्षा स्पष्ट रूप से जताई। बैठक में कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर्स की उपस्थिति और कार्य निष्पादन पर भी गहन चर्चा की गई। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सीएचओ की उपस्थिति की सत्यापन की जिम्मेदारी दूसरे विभागों के अधिकारियों को दी जाए। उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि जो ष्द्धश कार्य नहीं कर रहे हैं, उन्हें सेवा से बाहर किया जाए। यह कार्रवाई सीएमएचओ स्तर पर की जानी चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मामला मेरे संज्ञान में आया, तो संबंधित कंट्रोलिंग डॉक्टर पर भी कार्रवाई की जाएगी।

आवास योजना के वितरित किए गए स्वीकृति पत्र

समय जगत, टिमरनी। नगर परिषद टिमरनी रेन बसेरा भवन में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री का लाइव प्रसारण कार्यक्रम में उपस्थित हितग्राहियों एवं नागरिकगणों को दिखाया जाकर योजना अंतर्गत पांच हितग्राहियों को गृह प्रवेश कराया गया एवं पांच हितग्राहियों को पचास पचास हजार रुपए की स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए।2.0 योजना अंतर्गत 6 हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र प्राप्त किए गए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपाध्यक्ष नगर परिषद टिमरनी जयंत कौशल,पार्षद सुनील दुबे,श्रीमती हीरा गिरीश धुरे एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी अकबर शेख, केवल राम देबडा,योजना प्रभारी राजेश नागरे, श्रीमती शिखा दुबे आदि उपस्थित थे।कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार व्यक्त किया जाकर कार्यक्रम समाप्त किया।

पुलिस की तत्परता से बची महिला की जान,एसपी ने किया सम्मान

समय जगत, हरदा। यातायात पुलिस की टीम की सूझबूझ से एक महिला की जान बच गई।मिली जानकारी अनुसार गुड्डी बाई पति कैलाश नाथ, उम्र 50 वर्ष, निवासी खेड़ा ने पारिवारिक विवाद एवं पति द्वारा मारपीट से क्षुब्ध होकर अजनाल नदी, खेड़ीपुरा नाका के पुल से कूदकर आत्महत्या का प्रयास किया,वो तो भगवान का शुक्र रहा कि महिला पानी में नहीं गिरी और पुल की रेलिंग से लटकी हुई थी तथा कुछ ही क्षणों में नदी में गिरने वाली थी। उसी समय घटना की सूचना थाना यातायात को प्राप्त हुई। ड्यूटी पर तैनात अधिकारी एवं कर्मचारियों की टीम ने मानवीय संवेदनशीलता और साहस का परिचय देते हुए दौड़कर महिला को समय रहते बचा लिया। सहायक उप निरीक्षक बसंत चौधरी,प्रधान आरक्षक विमल, आरक्षक कपिल इवने,पुलिस सैनिक देवेन्द्र पाण्डे ने महिला को लटकते हुए पुल से ऊपर खींचकर जान बचाई। नगर में जैसे ही खबर फैली तो सभी ने पुलिस जवानों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज पुलिस जवानों की सतर्कता से एक परिवार बिखरने से बच गया।वहीं पुलिस कप्तान ने साहसिक कार्य करने वाले पुलिसकर्मीयों सहायक उप निरीक्षक बसंत चौधरी,प्रधान आरक्षक क्रमांक 61 विमल, आरक्षक क्रमांक 194 कपिल इवने,पुलिस सैनिक देवेन्द्र पाण्डे को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य विभाग ने स्थानांतरित कर्मचारियों को तत्काल रिलीव करने के दिये निर्देश

अतिथि शिक्षकों की भर्ती के संबंध में संभागीय उपायुक्त ने ली अधिकारियों की बैठक

समय जगत, शहडोल। संभागीय उपायुक्त, जनजातीय कार्य विभाग जे.पी.यादव ने विभागीय जिला एवं विकासखंड स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने अधिकारियो को निर्देश दिए कि शहडोल संभाग में अतिथि शिक्षको की भर्ती प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए, अधिकारी इसका ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि अतिथि शिक्षकों की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कर अध्यापन कार्य सुचारु रूप से विद्यालयो का संचालन सुनिश्चित करें। उन्होंने अधीनस्थ संस्थाओं के नियमित निरीक्षण कर संज्ञान मे आई समस्याओं का निदान करने के, कार्यालय और स्कूल समय पर खुलें तथा इन संस्थाओं के कार्यालय प्रमुख एवं स्टाफ समय पर पहुंचे, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कर्मचारियों के समस्याओं के निदान के लिए अधिकारियों को संवेदनशील होकर काम करें। संभागीय

उपायुक्त ने लंबित पेंशन प्रकरण, विभागीय जाँच, अनुकम्पा नियुक्ति प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि पेंशन प्रकरणों का समय पर निराकरण करावें, कोषालय से दर्ज आपत्तियों का त्वरित निदान करें, विभागीय जाँच का कार्य तीन माह मे पूर्ण करें। बहुत आवश्यक होने पर निलंबन की कार्यवाही हो, गंभीर आर्थिक और चारित्रिक प्रकरणों को छोड़कर किसी भी कर्मचारी को लम्बे समय तक निलंबित न रखा जाए, स्थानांतरित कर्मचारियों को तत्काल रिलीव कर नई संस्था मे कार्यभार ग्रहण कराना सुनिश्चित करें। न्यायालयीन प्रकरणों मे शीघ्र जवाब प्रस्तुत किए जाएं। उन्होंने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत सभी अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण किया जाये और वायुदूत ऐप पर अपलोड करना सुनिश्चित करें।

वीर शासन जयंती और अष्टाहनिका पर्व के समापन पर निकाली श्रीजी की भव्य शोभायात्रा

समय जगत बड़वाह। स्थानीय दिगम्बर जैन समाजजनो द्वारा आठ दिवसीय आषाढ़ की अष्टाहनिका पर्व भक्ति भाव के साथ मनाया। समाज के प्रचार मंत्री मनीष जैन ने बताया आरोन से पधारे ब्रह्मचारी पारस भैय्या जी व स्थानीय विधानाचार्य वैभव भैय्याजी के सानिध्य में प्रतिदिन प्रात: अभिषेक शांति धारा मंडल विधान का पूजन किया गया। रात्रि में कमल जैन, श्रेयांश जैन द्वारा सुमधुर भजनों पर संगीतमय आरती सम्पन्न करवाई। जिसके पश्चात भैय्याजी द्वारा प्रतिदिन प्रवचन दिए गए। उल्लेखनीय है कि इस आठ दिवसीय पर्व के अंतिम दिवस नगर में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसकी शुरुआत श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से हुई। यह शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होकर स्थानीय जैन धर्मशाला में पहुंची। जहा श्रीजी का अभिषेक पूजन कर यात्रा का समापन किया गया।आठ दिवसीय अष्टाहनिका पर्व में समाज के हर वर्ग ने बड़चढ़ कर अपनी सहभागिता देकर अपनी चंचल लक्ष्मी का सदुपयोग कर अपने पुण्य की वृद्धि की। समस्त आयोजनों के सफल समापन पर समाज अध्यक्ष अशोक जैन एवं कमेटी सदस्यों ने समाज सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

गुरुपूर्णिमा पर भाजपा नेताओं ने की गुरुवंदना

कटनी। भारतीय जनता पार्टी ने कल मंडल स्तर पर विविध क्षेत्रों में शिष्यों को पारंगत कर रहे गुरुजनों की वंदना की उनका सम्मान किया। जिला मीडिया प्रभारी आशुतोष शुक्ला ने बताया कि पूरे जिले में करीब 100 से अधिक ऐसे श्रेष्ठ गुरुजनों जो अलग अलग विधाओं में अपने शिष्यों को शिक्षित या प्रशिक्षित कर रहे हैं उनका गुरु स्थान में पहुंचकर पूजन सम्मान किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक टण्डन सोनी ने कहा कि मुख्यमंत्री मोहन यादव जी, प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, सांसद विष्णुदत्त शर्मा प्रभारी संजय साहू के मार्गदर्शन ने कटनी जिले में भाजपजनों द्वारा आज गुरुपूर्णिमा पर व्रहद रूप से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। श्री टण्डन ने कहा कि भाजपा ही एक मात्र ऐसा राजनीतिक संगठन है जो अपनी संस्क्रति सभ्यता के अनुरूप निरन्तर सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदार बनती है। कार्यक्रम संयोजक मृदुल द्विवेदी रामू साहू ने बताया कि गुरुजनों की पूजन

सम्मान के इस कार्यक्रम के तहत जिलाध्यक्ष दीपक सोनी टण्डन ने हनुमत कुटी आश्रम में सुरेंद्र दास महाराज, जैन मंदिर में पदम सागर जी महाराज, गायत्री नगर में आचार्य भूपनारायण मिश्रा, सुक्खन अखाड़ा में, विधायक संजय सत्येंद्र पाठक ने दद्दा धाम में बहोरीबंद विधायक प्रणय पांडेय ने भरभरा आश्रम में संत बनवारी दास जी, लोढ़ा पहाड़ , भेड़ा आश्रम, बड़वारा विधायक धीरेंद्र सिंह ने भरभरा आश्रम में संत बनवारी दास जी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री रामरतन पायल ने रैपुरा में डॉ रजनीश शास्त्री, पूर्व जिलाध्यक्ष पीताम्बर टोपनानी ने हरे माधव दरबार, पूर्व महापौर शशांक श्रीवास्तव ने माई नदी मंदिर में चन्द्र देव शुक्ला, महापौर प्रीति सूरी ने प्रेम रामायण समाज भवन में, निगमाध्यक्ष मनीष पाठक ने दद्दा धाम में, पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश सोनी ने श्री हनुमत कुटी आश्रम में, जिला महामंत्री सुनील उपाध्याय ने श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में, सतीश तिवारी ने मैहर के ओइला आश्रम में, राजेश चौधरी ने रुपनाथ मंदिर में गुरु वंदना की इसके अलावा जिला पदाधिकारी मंडलों के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ भाजपजनों ने विभिन्न स्थानों में गुरुजनों का सम्मान किया।

राजनाथ योगाश्रम पाठशाला में मनाया गया गुरु उत्सव, उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

सुठालिया । गुरूवार को नगर के सुरम्य अतिप्राचीन सिद्ध स्थल श्री राजनाथ योगाश्रम पाठशाला पर गुरु पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया इस मौके पर श्री श्री 1008 श्री राजनाथ, श्री गिरधारीनाथ, श्री गोविंदनाथ, श्री बाबूनाथ जी का समाधि पूजन अभिषेक हवन शांति पश्चात गुरु महाराज श्री बालकनाथ जी का पाद पूजन हुआ। इसके पश्चात गुरु दीक्षा कार्यक्रम व भंडारे का आयोजन हुआ। आश्रम पर बुधवार से ही साधकों का आना शुरू हो गया था रात्रि में भजन मंडलियों द्वारा भजन कीर्तन एवं रात्रि जागरण का कार्यक्रम हुआ गुरु उत्सव पर राजगढ़ गुना सीहोर विदिशा भोपाल आदि जिलों के साधक बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक महिला पुरुष बच्चे आदि शामिल हुए। वहीं

अखिल विश्व गायत्री परिवार सुठालिया द्वारा ब्यावरा रोड स्थित कंचन हरि गार्डन पर सायंकाल गुरु पूजन दीप यज्ञ का आयोजन किया गया। घोघरा घाट स्थित मनकामेश्वर महादेव मंदिर पर गुरु पूर्णिमा पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।यहां भी गुरू वंदना पश्चात बड़ी संख्या में साधकों ने भंडारे की प्रसादी ग्रहण की।भारत माता मंदिर पर भी उत्सव धूमधाम से मनाया गया।खनोटा देव बडली पर भी गुरू पूर्णिमा उत्सव से मनाया गया।यहां कैलाशवासी पं. हरिनारायण शर्मा परधानीकुंडल वाले के चित्र के समक्ष सभी ग्रामीणों ने पूजा अर्चना कर पं. बैनी प्रसाद वशिष्ठ अधिष्ठाता संस्कृत वैद विद्यालय आवान, पं.जुगल किशोर शर्मा की चरण वंदना कर उन्हें उपहार भेंट किए।

संक्षिप्त समाचार

स्कूल जा रहे मासूम की वाहन से गिरने पर मौत

आगर मालवा। तनोडिया के समीपस्थ ग्राम राघौगढ़ में गुरुवार सुबह करीब साढ़े आठ बजे बच्चों को स्कूल ले जा रही तूफान गाड़ी से गिरने से 5वर्षीय मासूम प्रवीण पिता प्रधानसिंह की मौत हो गई। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार गांव राघौगढ़ से से सुबह स्कूल जाने के लिए वाहन में बिठाया लेकिन थोड़ी दूर जाने पर वाहन का गेट खुलने से मासूम प्रवीण नीचे गिर गया जिसे सिर पर चोट लगने पर परिजन उज्जैन ले गए जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर सी एस पी मोतीलाल कुशवाह,थाना प्रभारी शशि उपाध्याय पहुंचे और परिजनों को समझाइस देकर बच्चें का पोस्टमार्टम हेतु आगर जिला अस्पताल पहुंचाया। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा। पुलिस ने वाहन जप्त कर मर्ग कायम कर मामला दर्ज किया।इस दौरान चौकी प्रभारी ए एस आई अजय जाट,अजय सूर्यवंशी,प्रधान आरक्षक विजय वर्मा,रवि प्रताप यादव ,दामोदर शर्मा सहित पुलिस बल और नागरिक मौजूद रहे।

महर्षि श्रृंगी ऋषि की जयंती पर हुआ आयोजन

समय जगत, आगर मालवा। महर्षि श्रृंगी ऋषि की जंयती के अवसर पर आज आगरमालवा जिला मुख्यालय पर सेकवाल समाज द्वारा आयोजित किये गये सामाजिक कार्यक्रम में सभी समाज बंधुओ ने श्रृंगी ऋषि का पूजन अर्चन करने के बाद आरती कर प्रसादी वितरण किया गया। इस मौके पर सेकवाल समाज के अध्यक्ष रामकिशन शर्मा, युवा अध्यक्ष सौरभ पांडे, राधारमण पंड्या, पंकज पांडेय, गिरिराज पंड्या, नलिनीकांत शर्मा रमेशकुमार शर्मा, गौरव पंड्या, योगेश शर्मा, गोविंद शर्मा, शुभम शर्मा, गिरिराज शर्मा, मनीष पंड्या महिला अध्यक्ष मिथिलेश पंड्या, शोभा पंड्या, हेमलता पांडेय, ममता शर्मा, पदमा शर्मा, स्मिता पंड्या आदि मौजूद थे।

पार्षद उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी शाइस्ता सुल्तान हुई विजयी घोषित

समय जगत, बैरसिया। नगर पालिका के वार्ड क्रमांक 07 में हुए उप चुनाव के परिणाम गुरुवार को आ गए है। इस चुनाव में भाजपा प्रत्याशी शाइस्ता सुल्तान ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी को 137 मतों से पराजित कर दिया हैं। वहीं इस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी तीसरे स्थान पर रहीं। वार्ड क्रमांक 07 में इससे पूर्व में एनसीपी से पार्षद को कलेक्टर ने अयोग्य घोषित कर दिया था। इससे 07 जुलाई को उपचुनाव हुआ था। इसमें इसमें भाजपा, कांग्रेस और एक निर्दलीय प्रत्याशी मैदान में थी। गुरुवार को आए चुनाव परिणाम में भाजपा प्रत्याशी को 451 मत, कांग्रेस प्रत्याशी को 196, निर्दलीय प्रत्याशी को 314 मत और नोटा को 14 मत मिले है। परिणाम उपरांत भाजपा कार्यकर्ताओं ने विजय जुलूस निकाला।

कलेक्टर ने बटियागढ़ एवं सदगुवां का किया औचक निरीक्षण

गर्भवती महिलाओं के लिए पौष्टिक आहार की बनाई जाए व्यवस्था : कलेक्टर

समय जगत, दमोह। जिले में सुबह से लगातार हो रही भारी बारिश के बावजूद चिन्हित जोखिम वाली गर्भवती एवं सामान्य गर्भावस्था वाली महिलाओं ने उत्साह पूर्वक सामुदायिक एवं आयुष्मान आरोग्यम प्राथमिक स्वास्थ्य संस्थाओं में पहुंचकर विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया। 491 महिलाओं का स्त्री रोग विशेषज्ञों/स्किल लैब प्रशिक्षित चिकित्सकों ने स्वास्थ्य जांच कर सेवाएं प्रदान की। जिला स्तर से कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर एवं जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रीता चटर्जी सहित कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा विशेष स्वास्थ्य जांच क्लीनिकों का जायजा लिया। कलेक्टर कोचर ने प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत जिले में संचालित विशेष स्वास्थ्य जांच क्लीनिक का औचक निरीक्षण के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बटियागढ़, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सदगुवां पर जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की जांच प्रक्रिया की जानकारी लेकर प्रदायित की जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा की। कलेक्टर ने पीएचसी सदगुवां पहुंचकर

अभियान के दौरान संचालित क्लीनिक का अवलोकन करते हुये स्वास्थ्य सेवा एवं बनाई गई व्यवस्था पर खुशी जाहिर की। उन्होने मौके पर ही दो महिलाओं को आयरन सुक्रोज देना पाया गया। चिकित्सक डॉ. पुष्पेन्द्र त्रिपाठी ने बताया कि सामान्य गर्भवती महिला की जांच संस्था में नियमित रूप से की जा रही है। 6 गर्भवती महिलाओं का चिन्हांकन किया गया है। कलेक्टर ने महिलाओं के परिजनों एवं आशा कार्यकर्ता से यहां दी जा रही उपचार सेवा एवं बनाई गई सुविधाओं के संबंध में चर्चा कर दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की प्रशंसा करते हुये कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। कलेक्टर ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बटियागढ़ पहुंचकर पहले से चिन्हित जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की सूची का क्लीनिक में आई महिलाओं से मिलान किया। उनसे चर्चा कर उपलब्ध सेवाओं की जानकारी ली। अवलोकन के दौरान देखा गया जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं के लिए पृथक से ओपीडी काउण्टर की व्यवस्था की गई है। गर्भवती महिलाओं के बैठने की सुविधा और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी। इस दौरान मौके पर ही 40 गर्भवती महिलाओं की जांच की जा चुकी थी। कलेक्टर ने सीबीएमओ को निर्देशित किया कि व्यवस्थाओं को और अधिक सुदृढ़ किया जाये। गर्भवती महिलाओं के लिए पौष्टिक आहार की व्यवस्था बनाई जाये। बाहर से लौटी गर्भवती महिलाएं जो जांच के लिए आई है, उनके एमसीपी कार्ड भी बनायें जायें। कलेक्टर ने निर्देश दिये कि सभी व्यवस्थाओं को और अधिक सुविधाजनक बनाया जाये। सुलभ और समुचित ढंग से स्वास्थ्य सेवाएं महिलाओं तक पहुंचाएं। सिविल अस्पताल हटा में वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. संगीता त्रिवेदी ने चिन्हित जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच के अलावा 24 गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी जांच की। संस्था में गर्भवती महिलाओं को सेहतमंद बनाये रखने में उपयोगी पोषण पोटली का वितरण भी किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पथरिया में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रियंका छाबडा, तेन्दूखेड़ा में डॉ. रवेन्द्र ठाकुर, जबेरा डॉ. पूर्वशी राय, बटियागढ़ में डॉ. मिताली हैरिसन, पटेरा में डॉ. प्रियांशी साहू एवं हिण्डोरिया में डॉ. ज्योति दुबे ने जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं की जाँच की।

अनाधिकृत कॉलोनी निर्माण के संबंध में प्रस्तुत करें आपत्ति

पन्ना। कलेक्टर न्यायालय द्वारा पन्ना में विभिन्न सर्वे नंबर एवं रकवा की भूमि पर रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र, कॉलोनी विकास की अनुज्ञा, नगर तथा ग्राम निवेश से लेआउट स्वीकृति एवं अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त किए बगैर तथा किसी भी प्रकार का आंतरिक विकास व रेरा में पंजीयन कराए बिना छोटे-छोटे भू-खण्ड विक्रय कर अनाधिकृत कॉलोनी का निर्माण पाए जाने पर आगामी कार्रवाई के लिए संबंधितजनों को आपत्ति प्रस्तुत करने के लिए सूचित किया गया है। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पन्ना एवं नजूल तहसीलदार पन्ना के प्रतिवेदन अनुसार ग्राम पन्ना स्थित सर्वे नंबर 4227 रकवा 0.275 हे. भूमि पर किशोरगंज मोहल्ला पन्ना निवासी अनावेदकगण किशोरी लाल, श्यामलाल, राजकुमार एवं सोनी द्वारा अनाधिकृत कॉलोनी का निर्माण किया जा रहा था। इसी तरह सर्वे नंबर 407 रकवा 0.384 हे. भूमि पर अनावेदकगण किशोरगंज मोहल्ला निवासी मु. मुरूस्सका, निशात, जावेद एवं नुजहत अहमद द्वारा भी अनाधिकृत कॉलोनी निर्मित की जा रही थी। उक्त दोनों कॉलोनी को अनाधिकृत घोषित करने की कार्रवाई प्रचलन में है। इस संबंध में किसी भी व्यक्ति द्वारा स्वयं उपस्थित होकर अथवा अधिवक्ता के माध्यम से आगामी 24 जुलाई तक कलेक्टर न्यायालय में आपत्ति प्रस्तुत की जा सकती है। कलेक्टर न्यायालय द्वारा पवई की सर्वे नंबर 3971 रकवा 1.114 हे. भूमि पर अवैध कॉलोनी निर्माण के संबंध में भी आगामी 28 जुलाई को कलेक्टर न्यायालय में पेशी तिथि निर्धारित की गई है। यहां पवई निवासी अनावेदकगण पन्नालाल, विन्द्रावन, दिलीप, विनोद कुमार, सुहद्री बाई, राधा बाई, गीता बाई एवं सुमन बाई द्वारा अनाधिकृत कॉलोनी का निर्माण करना पाया गया।

बीआरसीकी नाक के नीचे खेल रहे हैं निजी स्कूल वाले बड़ा खेल

कालापीपल। कालापीपल में निजी स्कूलों द्वारा अभिभावकों के साथ किताब,ड्रेस,फीस आदि पर खुली लूट मचा रखी है, यहां सब कुछ शाजापुर कलेक्टर महोदय सुश्री ऋजु बाफना को नहीं दिखाई दे रहा है,कालापीपल बी.आर.सी का यहां आलम है कि उन्हे नहीं मालूम होता है कि कालापीपल की निजी दुकानों पर निजी स्कूलों के द्वारा कौन सी पुस्तक विक्रय करवाई जा रही है, और कौन से निजी स्कूलों द्वारा ड्रेस चेंज की जा रही है जब मीडिया द्वारा बीआरसी से इस विषय पर बात की जाती है तो उनको जानकारी नहीं होती है, कौन सी पुस्तक निजी स्कूलों में चल रही पुस्तकों की लिस्ट जब इन से उपलब्ध करवाई जाती है।

निराश्रित गौवंश को एक सप्ताह में गौशालाओं में शिफ्ट करने के दिये निर्देश

जिला मजिस्ट्रेट ने सड़क दुर्घटनाओं पर रोकथाम एवं गौवंश की सुरक्षा के दृष्टिगत जारी किया प्रतिबंधात्मक आदेश

पन्ना। कलेक्टर एवं जिला मजिस्टेऊट सुरेश कुमार ने नेशनल एवं स्टेट हाईवे, प्रमुख जिला मार्ग व ग्राम सड़क एवं शहर के वार्डों की सड़कों पर निराश्रित पशु और गौवंश के बैठने तथा विचरण करने से घटित होने वाली सड़क दुर्घटनाओं पर रोकथाम के उद्देश्य से भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता अधिनियम 2023 की धारा 163(1) के तहत दो माह के लिए प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है, जिसके तहत कोई भी पशुपालक द्वारा सड़कों पर अपने पशु अथवा गौवंश को खुले में नहीं छोड़ा जाएगा। दूध का स्वयं के लिए उपयोग करने वाले पालक भी अपने पशु व गौवंश को अपने कैंपस के अंदर ही रखेंगे। साथ ही समस्त जनपद पंचायत सीईओ, नगरीय निकायों के सीएमओ तथा ग्राम पंचायत सरपंच, सचिव व रोजगार सहायक अपने कार्य क्षेत्र में आने वाली सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर पाए जाने वाले निराश्रित पशु व गौवंश को एक सप्ताह के भीतर नजदीकी गौशालाओं में रखे जाने की कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे। वर्तमान में जिले में 5 गौशालाओं का संचालन निजी व शासकीय संस्थाओं द्वारा तथा 33 गौशालाओं को संचालन ग्राम पंचायतों द्वारा किया जा रहा है, जबकि नगर पालिका परिषद पन्ना द्वारा एक गौशाला संचालित है। जिला मजिस्टेऊट द्वारा उप संचालक पशुपालन एवं सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्राधिकारियों को प्रति दिवस गौशालाओं का निरीक्षण कर प्रवेशित गौवंश रखे जाने संबंधी पंजी संधारित कर टैगिंग कार्य भी सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। गौशाला में पशु एवं गौवंश के प्रवेश के बाद गौवंश पालक को गौशाला से गौवंश की वापिसी पर खुराक खर्चा और अर्थदण्ड देना होगा। साथ ही संबंधित गौशाला में गौवंश एवं पालक की पहचान का रिकार्ड भी संधारित किया जाएगा। इसके अलावा निर्धारित समयावधि में विभागीय अधिकारियों द्वारा गौवंश को गौशालाओं में स्थानांतरित नहीं करवाने तथा सड़कों पर गौवंश के विचरण की स्थिति में विभागीय कार्रवाई के साथ भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के प्रावधान अनुसार अभियोजन की कार्यवाही की जाएगी। इसके अतिरिक्त उल्लंघनकर्ता पशुपालकों के विरूद्ध भी निर्धारित प्रावधान अनुसार अभियोजन की कार्यवाही होगी। उल्लेखनीय है कि समय-समय पर क्षेत्र भ्रमण, समाचार पत्रों, सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से निराश्रित पशु एवं गौवंश के सड़क पर बैठने व विचरण के कारण दुर्घटनाओं का तथ्य संज्ञान में आने पर जिला मजिस्टेऊट द्वारा उक्तादेश जारी किया गया है। पूर्व में भी इस संबंध में स्थानीय निकाय के अधिकारियों तथा सरपंच एवं सचिव को निर्देश जारी किए गए थे। मुख्यमंत्री एवं मुख्य सचिव द्वारा भी निराश्रित पशु व गौवंश को गौशाला एवं कांजी हाउस में प्रवेश के निर्देश दिए गए थे। इसके बावजूद पशुपालकों द्वारा इन्हें खुली सड़कों में छोड़ा जा रहा है, जिससे सड़क व वाहन दुर्घटनाओं के साथ पशु एवं जन हानि हो रही है। दुर्घटनाओं की रोकथाम सहित पशु व गौवंश की समुचित सुरक्षा व देखभाल के मद्देनजर इन्हें गौशालाओं में शिफ्ट करने के निर्देश दिए गए हैं।

गायत्री शक्तिपीठ में मनाया गया गुरुपूर्णिमा पर्व

हटा। गायत्री शक्तिपीठ में गुरुपूर्णिमा महोत्सव में प्रथम दिवस सूर्योदय से सूर्यास्त तक गायत्री महामंत्र जप एवं द्वितीय दिवस पंचकुंडीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से 6 पारियों में पीतवस्त्र धारी परिजनों ने यज्ञ भगवान को अपनी आहुतियां प्रदान की। प्रज्ञापुत्र डॉ सीएलपनेमा ने गुरु तत्व की विवेचना करते हुए गुरु का ब्रह्म, विष्णु एवं महेश के रूप मे गुरु के महत्व पर प्रकाश डालते हुए परिजनों से गुरु को दीक्षा के समय दिए गए कार्यों को करने की बात कही। उन्होंने गुरुपूर्णिमा को गुरुसत्ता के प्रति समर्पण का दिवस बताया। मुख्य यजमान हरिनारायण चौरसिया ने यज्ञ में एमपी बाथरे का जन्म दिवस मनाया गया। पंडित मदन गोपाल दुबे एवं शैलेंद्र नायक के द्वारा गायत्री महायज्ञ संपन्न कराया गया।

न्यायालय नायब तहसीलदार बैरागढ चीचली वृत्त कोलार भोपाल म.प्र.

प्रकरण क्र. 1472/अ-6/2025-26

इश्तहार

आवेदक संगीता शर्मा आ./पत्नि अजय कुमार शर्मा निवासी फ्लेट नं. 302 ब्लॉक टाईप डी.एम. 16/302 आई.बी.डी. होल मार्ग सिटी कोलार रोड भोपाल द्वारा ग्राम सनखेडी स्थित खसरा नंबर 2, 3, 7, एवं 8 क्षेत्रफल 2179 वर्गफिट अर्थात 202.56 वर्गमीटर हेतु भूखंड/मकान क्रं. 1 एवं 2 के आवासीय कॉलोनी सर्वजन गृह निर्माण सह. समिति मर्या. भोपाल में का विक्रय पत्र के आधार पर नामांतरण किये जाने का आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतएव आवेदक के उपरोक्त आवेदन के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो इस इश्तहार के जारी होने के दिनांक 15/07/2025 के भीतर इस न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। समयावधि पश्चात आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 07/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से जारी किया गया।

अति. तहसीलदार तहसील कोलार जिला भोपाल

न्यायालय नजूल अधिकारी, तहसील कोलार, भोपाल

क्रमांक/क्यू/रीडर/2025
भोपाल दिनांक 11.07.2025
प्रकरण क्रमांक /बी-121/2025-26

इश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदकगण श्री मनीष जैन पुत्र स्व. आर. के. जैन, श्रीमति निति जैन पत्नी श्री मनीष जैन, श्री अर्पण जैन, श्री अरमान जैन पुत्रगण श्री मनीष जैन निवासीगण ई-5/24 अरेरा कॉलोनी भोपाल ई-5/25 द्वारा ग्राम शाहपुरा, अरेरा कॉलोनी तहसील कोलार स्थित भू-खंड क्रमांक क्षेत्रफल 9600 वर्गफिट है, के स्थाई पटटाधिकार को भूमि स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है, जो इस न्यायालय में विचाराधीन है।

आवेदक द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त नजूल भूमि के भूमि स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो वह इस इश्तहार के जारी होने के दिनांक से 15 दिवस के भीतर इस न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। समयावधि पश्चात् आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 11.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुद्रा से जारी किया गया।

नजूल अधिकारी तहसील कोलार, भोपाल

प्रारूप - दस
(नियम-7 देखिये)
न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन, कोहेफिजा जिला भोपाल)
रा.प्र.क्र. 0659/अ-6/2025-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 16.7.2025 को समय दोपहर 3 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिए गए हों या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची : ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 424/2/2/1/1, 124/2/2/2, 397 क्षेत्रफल 157.79 वर्गमीटर, उस व्यक्ति का विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) 1. श्रीमती सारिका जैन/ राजेश जैन निवासी शहर।

आज दिनांक 11.7.25 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) वृत्त भोपाल

प्रारूप - दस
(नियम-7 देखिये)
न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) वृत्त भोपाल
(पुराना जिला पंचायत भवन, कोहेफिजा जिला भोपाल)
रा.प्र.क्र. 0658/अ-6/2025-26

सार्वजनिक नोटिस

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अनुसूची में उल्लेख अनुसार भू-अभिलेखों में नामांतरण की कार्यवाही इस न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है। कोई भी हितबद्ध व्यक्ति दिनांक 16.7.2025 को समय दोपहर 3 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ वृत्त भोपाल के समक्ष स्वयं या अपने अधिवक्ता जिसे सम्यक रूप से अनुदेश दिए गए हों या वैध प्रतिनिधि के द्वारा उपस्थित होकर विचाराधीन नामांतरण के संबंध में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नियत दिनांक के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

अनुसूची : ग्राम का नाम बडबई, खसरा नंबर 424/2/2/1/1, 124/2/2/2, 397 क्षेत्रफल 1610.77 वर्ग., उस व्यक्ति का विवरण जिनके पक्ष में नामांतरण विचाराधीन है (आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम एवं पता) 1. श्रीमती सारिका जैन/ राजेश जैन निवासी शहर।

आज दिनांक 11.7.25 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

तहसीलदार नजूल संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) वृत्त भोपाल

म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

:: आम सूचना ::

अयोध्या नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल में भूखण्ड / भवन क्रमांक ई.डब्ल्यू.एस. 240 एफ- सेक्टर मण्डल द्वारा श्री सतीश खटीक आत्मज श्री वीरेश खटीक के नाम हस्तान्तरण आदेश क. 833 दिनांक 24/06/2025 को हस्तान्तरित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 10/10/2023 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। केता / विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र, शपथ-पत्र, संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्री विजय कुमार रायकवार आत्मज स्व. श्री रामदयाल के नाम पर हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 02/08/2024 को क्रेता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त संपत्ति श्री विजय कुमार रायकवार आत्मज स्व. श्री रामदयाल के नाम पर हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से मय सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2, भोपाल

न्यायालय तहसीलदार वृत्त -3 तहसील-हुजूर जिला भोपाल

प्रकरण क्रमांक -1586/अ-6/2025-2026
मौजा- रसूलिया पठार तहसील हुजूर, भोपाल

:: उद्घोषणा पत्र ::

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री नसरूल्ला खान आत्मज श्री कदीर अहमद खान निवासी मकान नं. एमडी /60, दीपका कालोनी पोस्ट आफिस गेवरा प्रोजेक्ट जिला कोरबा ने द्वारा म.प्र.भू.रा.संहिता 1959 की धारा 109, 110 के तहत आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दस्तावेज ई पंजीयन क्रमांक - 9 / 2454 दिनांक..... के आधार पर क्रय की गई भूमि खसरा क्रमाक 610,611,637/2 व अन्य खसरे मे से 139.29 वर्गमीटर भूमि ग्राम रसूलिया पठार प.ह.नं. तहसील हुजूर जिला भोपाल का नामांतरण राजस्व अभिलेखों में आवेदक के नाम स्वीकृत किए जाने का अनुरोध किया गया है।

2- उक्त संबंध में किसी व्यक्ति / संस्था को कोई आपति हो तो वह अपनी आपत्ति स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से प्रकरण में नियत पेशी दिनांक 23.07.2025 को या इससे पूर्व इस न्यायालय में उपस्थित होकर पेश कर सकता है। समयावधि पश्चात् प्रस्तुत किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

उक्त उद्घोषणा पत्र मेरे द्वारा न्यायालय की पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से आज दिनांक 10.07.2025 को जारी किया गया।

तहसीलदार तहसील हुजूर भोपाल

न्यायालय तहसीलदार वृत्त -3 तहसील-हुजूर जिला भोपाल

प्रकरण क्रमांक- 1592/अ-6/2025 2026
मौजा- रसूलिया पठार तहसील हुजूर, भोपाल

:: उद्घोषणा पत्र ::

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री नसरूल्ला खान आत्मज श्री कदीर अहमद खान निवासी मकान नं. एमडी/60, दीपका कालोनी पोस्ट आफिस गेवरा प्रोजेक्ट जिला कोरबा ने द्वारा म.प्र. भू. रा.संहिता 1959 की धारा 109, 110 के तहत आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दस्तावेज ई पंजीयन क्रमांक-9/922 दिनांक 18/01/2012 के आधार पर क्रय की गई भूमि खसरा क्रमाक 610,611,637/2 व अन्य खसरे मे से 139.29 वर्गमीटर भूमि ग्राम रसूलिया पठार प.ह.न. तहसील हुजूर जिला भोपाल का नामांतरण राजस्व अभिलेखों में आवेदक के नाम स्वीकृत किए जाने का अनुरोध किया गया है।

2- उक्त संबंध में किसी व्यक्ति /संस्था को कोई आपति हो तो वह अपनी आपत्ति स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से प्रकरण में नियत पेशी दिनांक 23.07.2025 को या इससे पूर्व इस न्यायालय में उपस्थित होकर पेश कर सकता है। समयावधि पश्चात् प्रस्तुत किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

उक्त उद्घोषणा पत्र मेरे द्वारा न्यायालय की पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से आज दिनांक 10.07.2025 को जारी किया गया।

तहसीलदार तहसील हुजूर भोपाल

बहनों के हौसले की मजबूत डोर खुशियां हर ओर

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा

1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को

26 वीं किस्त के

₹ 1543.16 करोड़

56.74 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को ₹ 340 करोड़

30 लाख से अधिक बहनों को सिलेंडर रीफिलिंग राशि ₹46.34 करोड़ का सिंगल क्लिक से अंतरण

अपराह्न 2:30 बजे | ग्राम पंचायत नलवा, जिला उज्जैन

D-11064/25

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

राज्य स्तरीय निषादराज सम्मेलन

मछुआ कल्याण के विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं हितलाभ वितरण

अपराह्न 1:00 बजे । मुक्ताकाशी मंच, कालिदास अकादमी, उज्जैन

12 जुलाई 2025

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा श्री बालाजी प्रिंटर्स प्लॉट नं. 21, सेक्टर-एच, गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, भोपाल 462011 से मुद्रित कर जी-1 गोयल निकेत अपार्टमेंट प्रेस कॉम्प्लेक्स जोन-1 एमपी नगर भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। पिन नं. 462011, संपादक **अभिनव त्रिपाठी।**
RNI-MPHIN/2004/13180 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। **फोन :** 0755-4700402, ई-मेलः dainiksamayjagat@gmail.com